ओ३म्

सत्यार्थ-सन्देश

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१०

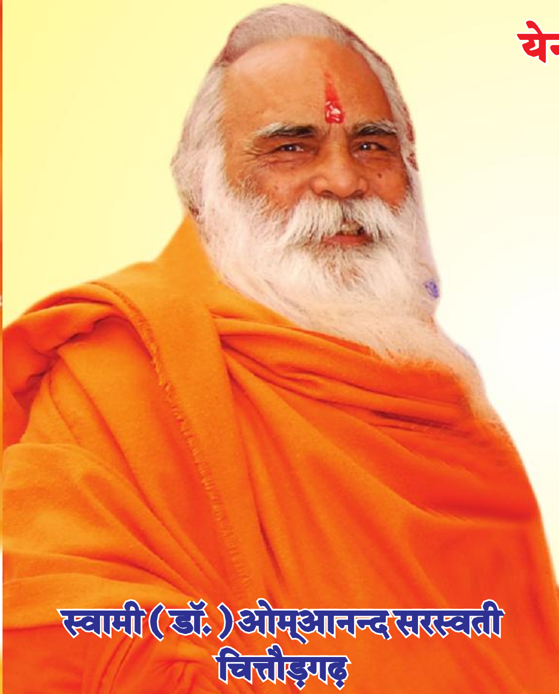

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती
चित्तौड़गढ़

येना वसून्याभृता तृळ्हा रक्षांसि वाजिना।

पूज्य स्वामी जी न्यास के जन्म से ही इसके मार्गदर्शक रहे हैं। पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ के अधिष्ठाता के रूप में आप निरन्तर अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। स्वामी जी वरिष्ठ साहित्यकार हैं। आप अनेक सुख्यात् मसिजीवियों के शोध प्रबन्ध के निर्देशक रहे हैं। परमपिता परमात्मा से आपके निरामय दीर्घायुष्य की सदैव प्रार्थना करते हैं।

त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः।

पूज्य स्वामी जी २५ वर्ष की अवस्था में ब्रह्मचर्य आश्रम से सीधे संन्यासाश्रम में प्रवेश कर, वेद तथा महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं के अनुसार समाज-निर्माण का व्रत लेकर कर्म-क्षेत्र में कूद पड़े। सत्यार्थप्रकाश-प्रणयन-स्थली नवलखा महल को राज्य सरकार से आर्य समाज को हस्तगत कराने में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री के रूप में आपकी मुख्य व महती भूमिका रही। न्यास को मार्गदर्शन प्रदान करने में सदैव तत्पर रहते हैं। सद्यः पिपराली में आश्रम स्थापित कर ग्रामीण क्षेत्रों तथा युवाओं में विशेष रूप से प्रचार - अभियान चला रहे हैं।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
पिपराली

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ–सन्देश

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११२
माघ शुक्ल पक्ष
विक्रम संवत्
२०६८
दयानन्दाब्द
१८८

सत्यार्थ संदेश में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

सत्यार्थ – सन्देश

गर्भावस्था के पूर्व, बीच में तथा बाद में मद्यपान, मादक, रुक्ष, पदार्थों - सिगरेट आदि का सेवन बिलकुल न करें ।

०९ | Pre and Postnatal care and Satyarth Prakash

०७ | महर्षि दयानन्द

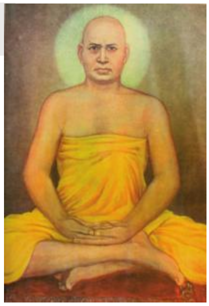

२७ | आर्य समाज और विवाह

१७ | वीर सावरकर

२६ | अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

०४	वेद सुधा
०५	ये कहाँ आ गये हम
१४	मातृभाषा का प्रभाव
१६	विश्वास
१९	व्याकरणशास्त्र और भाषाविज्ञान का मूल वेद
२३	किंवदन्तियों का रहस्य

स्वामी एवं प्रकाशक "श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास" उदयपुर   मुद्रक : चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.), उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८९२६७४७

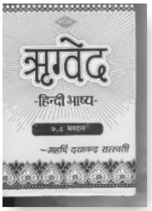

वेद सुधा

ओं शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्य्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः।।१।।

ऋ.अ. १। अ.६। व.१८। मं. ९।।

व्याख्यान- हे सच्चिदानन्दानन्त स्वरूप, हे नित्यशुद्धबुद्धमुक्त स्वभाव, हे अद्वितीयानुपम जगदादिकारण, हे अज, निराकार, सर्वशक्तिमन्, न्यायकारिन्, हे जगदीश, सर्वजगदुत्पादकाधार, हे सनातन, सर्वमंगलमय, सर्वस्वामिन्, हे करुणाकरास्मत्पितः, परमसहायक, हे सर्वानन्दप्रद, सकलदुःखविनाशक, हे अविद्यान्धकारनिर्मूलक, विद्यार्कप्रकाशक, हे परमैश्वर्यदायक, साम्राज्यप्रसारक, हे अधमोद्धारक, पतितपावन, मान्यप्रद, हे विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद, हे विश्वासविलासक, हे निरञ्जन, नायक, शर्मद, नरेश, निर्विकार, हे सर्वान्तर्यामिन्, सदुपदेशक, मोक्षप्रद, हे सत्यगुणाकर, निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव, दीनदयाकर, परमसुखदायक, हे दारिद्र्यविनाशक, निर्वैरविधायक, सुनीतिवर्धक, हे प्रीतिसाधक, राज्यविधायक, शत्रुविनाशक, हे सर्वबलदायक, निर्बलपालक, हे सुधर्मसुप्रापक, हे अर्थसुसाधक, सुकामवर्द्धक, ज्ञानप्रद, हे सन्ततिपालक, धर्म्मसुशिक्षक, रोगविनाशक, हे पुरुषार्थप्रापक, दुर्गुणनाशक, सिद्धिप्रद, हे सज्जनसुखद, दुष्टसुताड़न, गर्वकुक्रोधकुलोभविदारक, हे परमेश, परेश, परमात्मन्, परब्रह्मन्, हे जगदानन्दक, परमेश्वर, व्यापक, सूक्ष्माच्छेद्य, हे अजरामृताभयनिर्बन्धानादे! हे अप्रतिमप्रभाव, निर्गुणातुल, विश्वाद्य, विश्ववन्द्य, विद्वद्विलासक, इत्याद्यनन्तविशेषणवाच्य, हे मंगलप्रदेश्वर! आप सर्वथा सबके निश्चित मित्र हो, हमको सत्यसुखदायक सर्वदा हो, हे सर्वोत्कृष्ट, स्वीकरणीय, वरेश्वर! आप वरुण अर्थात् सबसे परमोत्तम हो, सो आप हम को परमसुखदायक हो। हे पक्षपातरहित धर्मन्यायकारिन्! आप अर्य्यमा (यमराज) हो इससे हमारे लिए न्याययुक्त सुख देने वाले आप ही हो। हे परमैश्वर्य्यवन् इन्द्रेश्वर! आप हमको परमैश्वर्ययुक्त शीघ्र स्थिर सुख दीजिए। हे महाविद्यावाचोधिपते, बृहस्पते, परमात्मन्! हम लोगो को (बृहत्) सबसे बड़े सुख को देने वाले आप ही हो।

हे सर्वव्यापक, अनन्त पराक्रमेश्वर, विष्णो! आप हमको अनन्त सुख देओ, जो कुछ माँगेंगे सो आपसे ही हम लोग माँगेंगे। सब सुखों का देने वाला आपके बिना कोई नहीं है। सर्वथा हम लोगों को आपका ही आश्रय है, अन्य किसी का नहीं, क्योंकि सर्वशक्तिमान् न्यायकारी दयामय सबसे बड़े पिता को छोड़ के नीच का आश्रय हम लोग कभी न करेंगे। आपका तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते, सो आप सदैव हमको सुख देंगे, यह हम लोगों को दृढ़ निश्चय है।।१।।

(आर्याभिविनय - महर्षि दयानन्द सरस्वती)

वेदों की महत्ता के विषय में महर्षि वेदव्यास ने लिखा है कि सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा ने वेदों का दिव्य ज्ञान दिया। इसमें, मनुष्यों के लिए हितकारक सभी कर्मों का उपदेश है। वेद परमात्मा का ज्ञान है, अतः न तो इसका कभी प्रारम्भ हुआ है न इसका कभी विनाश होगा। अर्थात् यह उत्पत्ति और विनाश से रहित है।

'अनादि निधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा। आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।' (महा.शांतिपर्व २३२-२४)
अथर्ववेद में भी यह स्पष्ट किया है कि परमात्मा के वेदरूपी कार्य को देखो-यह न तो कभी नष्ट होता और न यह कभी पुराना होता है।
'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति' (अथर्व. १०.८.३२)

जिस प्रकार सृष्टि का बनाने वाला परमात्मा नित्य एवं अनादि है उसी प्रकार उसका वेदों का दिया हुआ ज्ञान भी नित्य, अनादि एवं अपरिवर्तनशील है। वेदों में सारा ज्ञान-विज्ञान विद्यमान है। मनुष्य किस प्रकार लौकिक सुखों को प्राप्त करके पारलौकिक सुख अर्थात मोक्ष को प्राप्त करे इसका उपदेश वेदों में विद्यमान है। सृष्टि के प्रारम्भ से वेदों के पठन-पाठन की परंपरा रही है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण ने भी वेदों का ज्ञान प्राप्त किया था इसलिए उनके लिए वेदवेदांगवित् विशेषण का प्रयोग किया है।

जितना पुराना यह संसार है, उतने ही पुराने वेद हैं। क्योंकि संसार में मनुष्य को किस प्रकार रहना चाहिए, कैसे कर्म करने चाहिए इसका उपदेश भी परमात्मा ने सृष्टि का निर्माण करके अग्नि-वायु-आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों के माध्यम से ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद और अथर्ववेद इन चारों वेदों का उपदेश किया और यह उपदेश सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्यों के उत्पन्न होने पर दिया क्योंकि कुछ वर्षों के बाद वेदों का ज्ञान देता तो पहले उत्पन्न होने वाले मनुष्य परमात्मा के ज्ञान (वेद) से वंचित हो जाते , अतः जितना पुराना यह संसार है उतने ही पुराने वेद हैं यह मान्यता सदा से मानी जाती रही है।

- डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

ये कहाँ आ गये हम

अभी हमने अपने गणतंत्र का ६३ वाँ जन्मदिन मनाया है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है पर साथ ही आत्मावलोकन का भी। १८५७ में हमारा प्रथम स्वातंत्र्य समर प्रारम्भ हुआ। मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने शीश काटकर अर्पित कर देने वाले वीरों की एक सुदीर्घ परम्परा के फलस्वरूप हमें स्वतंत्र भारत भू पर श्वाँस लेने का सौभाग्य मिला। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने भी स्वराज्य को सर्वोपरि स्थान दिया। इस स्वराज्य की गति सुराज्य की ओर हो, हम एक ऐसे समाज की स्थापना करने में सक्षम हों जहाँ बिना किसी भेदभाव के सबकी सर्वाधिक उन्नति हो, सामाजिक विषमताओं की समस्त खाइयों को पाट दिया जाय, सबको समान अवसर,समान आदर मिले, महर्षि दयानन्द के शब्दों में कहें तो हम एक ऐसे परिवेश का निर्माण कर सकें जहाँ 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये' ऐसी भावना प्रत्येक के हृदय में बलवती हो। जब विचार करते हैं तो हमें लगता है कि हम उतने सफल नहीं हुए। रावी के तट पर हमने जो शपथ ली थी उसे पूर्ण नहीं कर पाये। हम अपने गणतंत्र की मूल संकल्पना में 'सामजिक,आर्थिक और राजनैतिक न्याय; विचार,अभिव्यक्ति,विश्वास और उपासना की स्वतंत्रता; प्रतिष्ठा और अवसर की समता; व्यक्ति की गरिमा,राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता; जैसे लक्ष्यों को निर्धारित कर जिस भव्य भवन का निर्माण करना चाहते थे, वह आधा अधूरा ही रहा। विधि का शासन लागू करने हेतु किसी भी गणतंत्र में स्वतंत्र न्यायपालिका का होना आवश्यक है। हमने संकल्पना तो यही रखी, व्यवस्था भी ऐसी रखी, परन्तु जिन मुद्दों से कुर्सी प्रभावित होती हो न्यायपालिका के ऐसे निर्णयों को समतामूलक होते हुए भी संवैधानिक संशोधन की शक्ति के द्वारा कुचल दिया। आज भी ऐसा हो रहा है।

वस्तुतः 'सुराज्य' की अवधारणा 'परमार्थ' पर टिकी है। जब-जब भी 'स्वार्थ' बलशाली हुआ है,सुराज्य स्वप्न ही रहा है। हमें इस बात पर सदैव आश्चर्य रहा है कि एक व्यापारी कम्पनी जो बड़े विनीत भाव से जहाँगीर के दरबार में भारत में मसालों, चाय आदि का व्यापार करने की स्वीकृति लेने आई, भारत के ३३ करोड़ लोगों की भाग्य विधाता कैसे बन गई? इसका एक ही उत्तर है 'स्वार्थ'। स्वार्थ उदात्त मूल्यों तथा सार्वजनिक हित की बलि लेता ही है। विदेशी उपहार और विलासिता के साधन, जिनके दर्शन की चकाचौंध ने, जहाँगीर को उसी भाँति अन्धा कर दिया, जिस प्रकार पुत्र-मोह रूपी स्वार्थ ने आकण्ठ डूबे अन्धे धृतराष्ट्र के अन्दर की आँखों को भी अन्धा कर दिया था। महाभारत का सर्व-विनाशक युद्ध अगर धृतराष्ट्र के स्वार्थ की देन था तो जहाँगीर के स्वार्थ ने स्वाधीन भारतीयों के गले में गुलामी का पट्टा डाल दिया।

आज यह 'स्वार्थ' नामक राक्षस और भी भयंकर रूप में हमारे सामने अट्टहास कर रहा है। कलमाड़ी, कनिमोझी, राजा जैसे लोगों की एक लम्बी सूची से यह प्रत्यक्ष है। यह 'स्वार्थ' नहीं तो क्या है कि 'प्रजा' के अनेकों दुखीजनों द्वारा आत्महत्या करने पर भी जिस शासक की आँखें सजल नहीं होतीं वह अपनी बेटी के जेल जाने पर फूट-फूट कर रो पड़ता है।

भ्रष्टाचार की पायदान पर हम नीचे उतरने की बजाय ऊपर चढ़ रहे हैं। समता के जिस आदर्श को पाने के लिए हमने संविधान में भावना व्यक्त की थी,उसके लिए आवश्यक था कि जन्मगत जातिप्रथा रूपी विषबेल को पूर्णतः समाप्त कर दिया जाये। पर इस 'स्वार्थ' राक्षस का क्या करें? कुर्सी की भूख ने,वोटों की राजनीति की गणित ने इसे और पुष्ट कर, इतना शक्तिशाली बना दिया है कि यह भस्मासुर की भाँति सब कुछ भस्म कर रहा है। दाह की इस अग्नि में अल्पसंख्यक तुष्टीकरण नामक ज्वलनशील पदार्थ के डलने से इसकी लपटें गगनचुम्बी हो रही हैं।

हमने ६५ वर्ष पूर्व स्वतंत्रता तो प्राप्त की थी, पर आज हमारे निर्णय चाहे वह न्यूक्लियर संधि का मामला हो,बौद्धिक पेटेन्ट का मामला हो,सीमा पार से घुसपैठियों की निरन्तर बढ़ती जनसंख्या का प्रश्न हो, इन विषयों पर निर्णय लेने में केवल 'देशहित' को ध्यान रखें, क्या ऐसी स्वतंत्रता हम ले पा रहे हैं? अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समूह के दबाव इनके पीछे कार्यरत हैं, ऐसा कुछ बुद्धिजीवियों का विचार है।

हमें ध्यान रखना होगा कि बदलते वैश्विक परिवेश में नये नाम से फिर से कोई ईस्ट इंडिया कम्पनी परोक्ष प्रकारों से हमारे स्वदेश हित के निर्णयों को किंचित मात्र भी प्रभावित न कर सके।

प्रभुकृपा करे। हम सब अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करें और हमारा प्रिय देश फिर से शीर्षस्थ ऊँचाइयों को स्पर्श करे। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जी की कामना साकार हो-

मानस भवन में आर्यजन, जिसकी उतारें आरती।
भगवान फिर से विश्व में गूँजे हमारी भारती।।

अशोक आर्य
चलभाष - ०६३१४२३५१०१, ०६००१३३६८३६

साहस और संघर्ष ही उन्नति के हैं मूल
इन दोनों के बल पर ही खिलते खुशी के फूल

सत्यार्थ सन्देश घर घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत् साहित्य - विशेष छूट

		अंकित मूल्य	रियायती मूल्य
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (हार्ड बाउन्ड)		८० रु.	४० रु.
सत्यार्थ प्रकाश कवितामृत (कविवर जय गोपाल जी की अमर कृति काव्य सौदर्न्य से भरपूर)	सजिल्द	२५० रु.	१२५ रु.
	अजिल्द	२१० रु.	१०० रु.
सत्यार्थ प्रकाश मानक संस्करण		८० रु.	४० रु.
दयानन्द दर्शन (एक ऐसी भव्य चित्रकथा जो कि अनेक वेबसाईट और आर्य समाज के भवनों में शोभित है। प्रत्येक आर्य परिवार में संग्रह योग्य)	बड़ा आकार	२५० रु.	२२५ रु.
	पेपर बैक	१५० रु.	१२५ रु.

पं. विजयपाल विद्यावारिधि, सम्पादक - वेदवाणी को राष्ट्रपति सम्मान मिलने पर हार्दिक बधाई ।

- न्यास परिवार

महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द जी महाराज के हृदय में यूँ तो सारे जगत् और प्राणी मात्र के लिए अथाह प्रेम था परन्तु क्योंकि भारत को वे सभ्यता का केन्द्र और संसार का धार्मिक गुरु मानते थे, अतः उसकी अधोगति को देखकर तो उनकी दशा कुछ ऐसी हो जाती थी –

इक टीस सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है
हम रात को उठकर रोते हैं, संसार यह सारा सोता है।।

वे चाहते थे कि उसके अभ्युदय का सूर्य पुनः उदय हो, अतः उच्च स्वर से यह कह-कहकर जगाते थे –

भारत निवासियो ! उठो तुम खूब सो चुके,
पैदा किया था तुमने जो कुछ सब तो खो चुके।
अब क्या रहा है जिसपे तुम्हें इतना गर्व है,
संसार में असभ्य अशिक्षित तो हो चुके।।

मातृभूमि की आरती उतारते हुए आनंद विभोर हो उठते थे। उसके पिछले इतिहास पर दृष्टि जाती थी तो हृदय गद्गद हो जाता था।

राम कृष्ण की लीला स्थल तुम, दिव्य महापुरुषों की जननी,
ग्राम-ग्राम है तीर्थ तुम्हारा, धूल तुम्हारी पातक हरणी।
जीवन-मंत्र तुम्हारा दर्शन, पावन वेद तुम्हारी वाणी,
चिंतन-मनन विचार शस्त्र हैं, गायक है गीता कल्याणी।।

परन्तु जो भारत सामने था वह भी तो देखना पड़ता था ऐसा ज्ञात होता था कि हृदय की तंत्री का तार बजता हुआ यह कह रहा है –

प्यारे भारत की रुलाती है बयाबानी मुझे,
जाके कोने में किसी जंगल के रो लेता हूँ मैं।
राग सुनता हूँ तो होती है परेशानी मुझे,
याद आती है जब अपने घर की वीरानी मुझे।।

एक दिन श्री कालीचरण जी के उपवन में कई लोगों के साथ बैठे थे इतने में एक स्त्री अपना मरा हुआ बच्चा मैले और गंदे कपड़े में लपेटे हुए वहाँ से गुजरी। आपने पूछा –

माई! तुमने इस पर श्वेत कपड़ा क्यों नहीं लपेटा ? मैं गरीब हूँ, मेरे पास श्वेत कपड़ा नहीं है यह सुनना था कि आपकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली –

देखी दुखी दरिद्रा जब एक देश नारी,
रोए वह विकल होकर, परमार्थ के पुजारी।
सोचा, लगे थे जिनके ठट वस्त्र अन्न धन के,
हा शोक ! आज उनको लाले पड़े कफन के।।

रोना तो सब ही जानते हैं परन्तु ऋषि का रोना वह रोना नहीं जो हमारा रोना है। संसार वाले तो अपने लिए रोते हैं, परन्तु ऋषि संसार के लिए रोते हैं –

बंधन में ग्रस्त, करते क्रंदन हैं देश के जन।
मैं कर रहा हूँ बैठा एकान्त मोक्ष चिंतन।।

रोते हुए बोले- कल यही भारत सोने की खान था। अमन और आराम की जगह था। आत्म सम्मान और ऐश्वर्य यहाँ खेलते थे । परन्तु आज यह दशा है कि भारत के मरे हुए बच्चों के तन ढाँपने के लिए उनके माँ-बाप को अच्छा कपड़ा भी प्राप्त नहीं होता ।

भागलपुर की बात है। आप शाम को घूमने गए। बहुत रात गुजर जाने पर भी वापिस न आए। 'नंदन' आपका खाना मंदिर में पहुँचाकर चला गया। जब सवेरे को आया, तो देखता क्या है कि वह खाना उसी तरह पड़ा है । आश्चर्य से पूछा कि क्या आपने रात को खाना नहीं खाया? मुखारविंद से कथन किया –

इस देश में इतना पाप और इतनी अज्ञानता है कि कल लोग अपनी बेटियाँ पुरोहितों को दान दे रहे थे। मेरा सीना

यह तकलीफ तो भारत के श्रमजीवी लोगों की दुर्दशा को देखकर पैदा हुई है। ईसाई लोग कोल भील आदि भारतवासियों को ईसाई बनाने के लिए अपनी चालों के ताने-बाने तन रहे हैं और रुपया तो पानी की तरह बहा रहे हैं और हिंदुओं के पुरोहित हैं कि कुम्भकरण की नींद सो रहे हैं। उनके कानों में जूं तक भी नहीं रींगती। मैं चाहता हूँ कि आर्य जाति को एक माला में पिरो दूँ।

सारांश यह कि ऋषि को तो भारतवर्ष और आर्यजाति के हित के सिवा और कोई बात अच्छी न लगती थी।

(दयानन्द दिग्विजय से साभार)

फट गया। सारी रात इस चिंता ने घेरे रखा। खाने की याद तक नहीं रही। सच है-

ऋषिवर न अपनी मुसीबत पे रोये।
जो रोये तो भारत की हालत पे रोये ।।

प्रयाग में गंगा के तट पर एक वृद्ध महात्मा रहते थे। वे ऋषि को बच्चा कहकर पुकारा करते थे। एक दिन उस वृद्ध ने आपसे कहा – यदि तुम लोगों की भलाई के चक्र में न फसते तो इसी जन्म में तुम्हारी मुक्ति हो जाती। अब तो एक जन्म और लेना पड़ेगा। बोले- महात्मा जी ! जिन लाखों आदमीयों की मुक्ति का ख्याल मुझे घेरे हुए हैं उनकी मुक्ति हो जाए, मैं कई जन्म लेने को तैयार हूँ।

चाह नहीं सुख धाम स्वर्ग में, देवराज बन जाने की,
चाह नहीं बन जग प्रवर्तक, जग में पैर पुजाने की ।
चाह नहीं दुर्जय कोटि भर, विश्वजयी कहलाने की,
चाह नहीं धनराशि अमित पा, धन कुबेर पद पाने की।
चाह यही अज्ञात रूप से, पड़ा रहूँ जग में भगवान,
दुःखी दीन दुर्बल की खातिर, हो जाऊँ हँस-हँस बलिदान ।।

आप दानापुर में प्रचार कर रहे थे। एक दिन रात के बारह बजे जाग उठे। इधर-उधर फिरने लगे। आप के पाँव की आहट सुनकर एक सेवक भी जाग उठा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि आप बड़ी घबराहट में हैं और आपका दिल बेचैन है। प्रार्थना की-महाराज को कोई तकलीफ हो तो आदेश दीजिए। मैं दवा लाने के लिए उपस्थित हूँ। आपने कहा –

कि यह वह रोग नहीं है जिसकी तुम दवा ला सको।

दिल में कुछ ऐसा जोश है कि जबां से कहा जाता नहीं,
जिगर में अब वह दर्द है कि जिसकी कुछ दवा नहीं।

कविता

मेरा देश आज आजाद हो गया मेरा देश आज बर्बाद हो गया।
भाई भाई खून का प्यासा हुआ है खून का ये रंग भी उदासा हुआ है।।
जिंदगी का सार आज पैसा हुआ है राम की इस धरती पर ये कैसा हुआ है।
गुंडों और उचक्कों का सैलाब हो गया।।
सीता के इस देश में, बिकती हैं नारियाँ पद्मिनी के देश में लुटती हैं नारियाँ।।
झांसी की भी रानी अब खड़ी रोती है वासना की भूख बनीं आज नारियाँ।
नार्यस्तु पूज्यन्ते सफाया हो गया।।
राजनीति आज चापलूसी हो गयी शिक्षा आज धनवानों की दासी हो गयी।
बंदूक जो बनाए ब्रह्मचारी हो गया इज्जत जो लूटे सदाचारी हो गया।।
भिंडरवाला आततायी संत हो गया।।
मेहनत की आज परिभाषा बदली है ईमानदारी की भी आज भाषा बदली है।
पैसा लेकर काम करदे ईमानदार है चुगलखोर केवल आज बफादार है।।
मेहनत का पर्याय चाटुकार हो गया।।
मेरा देश आज आजाद हो गया।।

-ई. रामेश्वर दयालु गुप्त, गाजियाबाद

प्रत्येक बड़े शुभ कार्य को चार स्थितियों से निकलना पड़ता है।
१. उपेक्षा २. परिहास ३. विरोध ४. सहयोग
कार्य पूर्ण होने पर ईर्ष्यालुओं को छोड़कर
सभी लोग उसकी प्रशंसा करेंगे

– स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोलाझाल, मेरठ

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जाननेवाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

Pre and Postnatal care and Satyarth Prakash

Dr. Priya Agrawal

My father- in- law inspired me to read Satyarth Prakash, an immortal work of Swami Dayanand Saraswati. I found it amazing consisting not only the guidelines related to atma, parmatma as expected in the work produced by a religious and spiritual Saint, but he also dealt in detail the smallest things which affects and which are necessary to impose the moral values in human being.

As far as I think the utmost aim of Swami ji in writing Satyarth Prakash is overall development of human being and society. He is sure enough that the process starts with the inception of marriage. Here Swami Dayanand established the need of so many precautions which must be observed by the parents even before they conceive, during pregnancy and after delivery. The environment around the child must be such that he naturally develops in a good civilian, committed to benefit of humanity at large.

One thing I must admit that many concepts of Maharshi Dayanand was well ahead of his era and shake hands with modern scientists. There is no conflict with the law of nature. I must say that great rishi was even ahead of modern era at certain points.

I will try to elaborate some of such concepts produced by Swamiji,which are in perfect harmony with modern scientists especially regarding conception, pregnancy and post natal care.

One thing which may not be accepted by modern generation is that swami Dayanand is of firm view that couple must conjugate only when child is required and not for lust. But, of course Swamiji has his own reasons. But it is not the subject matter of this essay.

Preconception care- Swamiji wrote in Satyarth Prakash -

'माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य; मद्य, दुर्गन्ध,रूक्ष, बुद्धि नाशक पदार्थों को छोड़के जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें, वैसे घृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रजस्, वीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हों।

(सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समु. पृ. २८)

'जब दोनों का दृढ़ प्रेम विवाह करने में हो जाय, तब से उनके खान-पान का उत्तम प्रबंध होना चाहिए कि जिससे उनका शरीर जो पूर्व ब्रह्मचर्य और विद्याध्ययनरूप तपश्चर्या और कष्ट में दुर्बल होता है, वह चन्द्रमा की कला के समान बढ़के पुष्ट थोड़े ही दिनों में हो जाय'

(सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थ समुल्लास पृ. १३)

Modern scientists perfectly follow the same thought. Several studies have been performed and are still going on. Some conclusions are as follows-

Preconception care can make a positive difference to your health and the health of your child. More and more evidence points to the fact that the way we were

nourished and grew in our mother's womb can have an important impact on our health as an adult.

The aim of preconception care is to prepare a would- be- mother's body for pregnancy, birth and beyond. This preparation ideally should occur for at least four months prior to trying to fall pregnant **(Naish and Roberts, 1998).** Preconception care improves your chances of falling pregnant more easily, having a healthy pregnancy and healthy baby and aiding recovery after the birth.

Preconception care is just as important for men as for women. They contribute half the genetic material that makes up the baby. It takes time to develop the sperms so that they are able to fertilize an egg. So it makes sense to practice preconception care for men for at least three months prior to trying to conceive a baby.

I would like to remind again that Swami Dayanand Saraswati stresses for the same care, same nutritious enrichment for 'would be couple' in the fourth chapter of his famous book SATYARTH PRAKASH. Hence begin making healthy changes three months to a year before you conceive. The evidence shows that healthy nutrition and fertility is linked for both men and women.

Nutritious diet

Vitamin B helps reduce a baby's risk of neural tube birth defects such as spina bifida. If your family has a history of neural tube defects, it is most important.

Folic acid may be obtained naturally through dark green leafy vegetables (i.e. spinach), citrus fruits, nuts, legumes, whole grains, and fortified breads and cereals.

Calcium: It is recommended that women should get at least 1,000 mgs (three 8 oz glasses of skim milk) of calcium a day if they are considering

getting pregnant. Calcium may be obtained from natural sources such as cottage cheese, low-fat yogurt, rice, and cheese.

Some foods are hindrance in achieving this target. For example Caffeine and Alcohol.Studies shows, in large amounts caffeine found to decrease the chances of falling pregnant. It is important to wean yourself off of caffeine (including chocolate), because research has shown that more than 200-300 milligrams of caffeine per day may reduce fertility by 27 percent.

Caffeine also impedes upon the body's ability to absorb iron and calcium.

The same is true with alcohol. Even in moderation alcohol has been found to reduce the chances of falling pregnant.

Avoid artificial sweeteners, alcohol, recreational drugs, and cigarettes as all have the potential of harming your soon-to- be conceived baby.

During Pregnancy-

Swamiji wrote in Satyarth Prakash-

'गर्भाधान के पश्चात् स्त्री को बहुत सावधानी से भोजन-छादन करना चाहिए. ....बुद्धि, बल, रूप, आरोग्य, पराक्रम, शान्ति आदि गुणकारक द्रव्यों ही का सेवन स्त्री करती रहै कि जब तक संतान का जन्म न हो.

(सत्यार्थ प्रकाश, पृ. २८)

'पुरुष वीर्य की स्थिति और स्त्री गर्भ की रक्षा और भोजन-छादन इस प्रकार का करें कि .... गर्भ में बालक का शरीर अत्युत्तम रूप, लावण्य, पुष्टि, बल, पराक्रमयुक्त होकर दशवें महीने में जन्म होवे ....कभी गर्भवती स्त्री रेचक, रूक्ष, मादक द्रव्य, बुद्धि और बल नाशक पदार्थों के भोजनादि का सेवन न करे, किन्तु घी, दूध, उत्तम चावल, गेहूं, मूंग, उड़द आदि अन्न-पान और देशकाल का भी सेवन युक्तिपूर्वक करे। (सत्यार्थ प्रकाश,पृ.९४)

Modern nutritionists think in the same direction.

Studies shows that better to Quit following commodities to maintain safe pregnancy and to keep your child healthy in womb and in his life.

Caffeine- According to a Danish study appearing in the November 2005 issue of the American Journal of Epidemiology "Pregnant women who drink eight or more cups of coffee a day may be at a higher risk of spontaneous abortion, stillbirth or fetal deaths."

Alcohol is one of the most dangerous drug for pregnant women, especially in the early weeks. In the mother's body, alcohol breaks down chemically to a cell-damaging compound that is readily absorbed by the fetus. Heavy drinking during early pregnancy greatly increases the risk of a cluster of birth defects known as Fetal alcohol syndrome. This cluster includes a small skull (microcephaly), abnormal facial features, and heart defects, often accompanied by impeded growth and mental retardation.

Smoking - Not only is smoking harmful to you, it's also harmful to your baby during pregnancy. When you smoke during pregnancy, your baby is exposed to dangerous chemicals like nicotine, carbon monoxide and tar. These chemicals can lessen the amount of oxygen that your baby gets. Oxygen is very important for helping your baby grow healthy.

anxiety and future allergy and asthma risk in human infants. Researchers at Harvard suggest that even with low levels of allergen exposure in the home, if the mother was stressed or anxious during pregnancy, the fetus's immune system became compromised and increased the risk of developing allergies and asthma after birth.

Infants of mothers who were stressed and/or anxious during pregnancy are also more likely to show behavioral inhibition (e.g. preferring familiar faces, places and toys over anything new), more likely to be shy and are usually less social. As adults, babies who experience stress in utero, are more likely to experience chronic health issues such as heart disease, high blood pressure, and diabeties. So what is the connection between the mother's anxious disposition and fetal stress? Most research points to the effects of cortisol (the stress hormone) and adrenaline. High levels of these hormones are found in anxious or stressed mothers and then are transferred to the fetus, causing it to develop with a stress baseline that is higher than fetuses of less anxious mothers.

Swamii Dayanand Saraswati correctly stated in Satyarth Prakash-

लड़का-लड़की के आधीन विवाह होना उत्तम है. जो माता-पिता विवाह करना कभी विचारें, तो भी लड़का-लड़की की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिए, क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता और संतान उत्तम होते हैं.

(सत्यार्थ प्रकाश, पृ.८३)

I salute the scientific wisdom of great saint.

7, Basant Vihar, New Bhupalpura
Udaipur-313001

उक्त लेख में विदुषी लेखिका ने योग्यता पूर्वक ऋषि-स्थापनाओं के वैज्ञानिक पक्ष को स्थापित किया है।

आरोग्य, परस्पर प्रसन्नता, किसी प्रकार का शोक न हो .

(सत्यार्थ प्रकाश,पृ.२८)

'जैसा चरक और सुश्रुत में भोजन–छादन का विधान और मनुस्मृति में स्त्री–पुरुष की प्रसन्नता की रीति लिखी है, उसी प्रकार करें और वर्तें. (सत्यार्थ प्रकाश,पृ. २८)

How important is this let us see with the eyes of modern scientist .

If mother is stressed before and during pregnancy it will affect the physical and mental health of the child negatively. As per a study 'For child's overall health, both physical and emotional abuse during pregnancy were significant and negative predictors. Emotional abuse during pregnancy also significantly affected child temperament.

Research states that prenatal stress and anxiety is associated with a higher incidence of preterm birth, lower birth weight and length and an increased risk of miscarriage. In addition, children born to mothers who were stressed or anxious during pregnancy are more likely to be fussy and more difficult to soothe. Also they can have problems with attention and tend to react more emotionally to new situations than babies born to non-anxious mothers.

A study published in 2008 at the Harvard Medical School was the first of its kind to identify a link between prenatal stress and anxiety and future allergy and asthma risk in human infants. Researchers at Harvard suggest that even with low levels of allergen exposure in the home, if the mother was stressed or anxious during pregnancy, the fetus's immune system became compromised and increased the risk of developing allergies and asthma after birth.

Infants of mothers who were stressed and/or anxious during pregnancy are also more likely to show behavioral inhibition (e.g. preferring familiar faces, places and toys over anything new), more likely to be shy and are usually less social. As adults, babies who experience stress in utero, are more likely to experience chronic health issues such as heart disease, high blood pressure, and diabeties. So what is the connection between the mother's anxious disposition and fetal stress? Most research points to the effects of cortisol (the stress hormone) and adrenaline. High levels of these hormones are found in anxious or stressed mothers and then are transferred to the fetus, causing it to develop with a stress baseline that is higher than fetuses of less anxious mothers.

Swamii Dayanand Saraswati correctly stated in Satyarth Prakash-

लड़का–लड़की के आधीन विवाह होना उत्तम है. जो माता–पिता विवाह करना कभी विचारें, तो भी लड़का–लड़की की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिए, क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम होता और संतान उत्तम होते हैं.

(सत्यार्थ प्रकाश, पृ.८३)

I salute the scientific wisdom of great saint.

7, Basant Vihar, New Bhupalpura
Udaipur-313001

उक्त लेख में विदुषी लेखिका ने योग्यता पूर्वक ऋषि–स्थापनाओं के वैज्ञानिक पक्ष को स्थापित किया है। इसी प्रकरण में दूसरी संतान–जन्म के सन्दर्भ में ऋषि ने लिखा है – 'जब स्त्री फिर रजस्वला हो, तब शुद्ध होने के पश्चात् उसी प्रकार ऋतुदान देवे।'

(सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थ समुल्लास पृ ९५)

यहाँ उल्लेखनीय है कि सत्यार्थ प्रकाश की पांडुलिपि में यहाँ वाक्य इस प्रकार था – 'जब स्त्री दूसरे महीने फिर रजस्वला हो, तब शुद्ध होने के पश्चात् उसी प्रकार ऋतुदान देवे' यहाँ ऋषि की अप्रतिम मेधा व वैज्ञानिक सोच को नमन करना होगा कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रूफ देखते समय इस 'दूसरे महीने' को हटा दिया। अगर यह इसी रूप में उपस्थित रहता तो तथ्य व वैज्ञानिक निष्कर्षों के विपरीत होता। लेखिका से

हमने उक्त सन्दर्भ में भी जानकारी व आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण जानना चाहा, तो उन्होंने अनेक प्रमाण दिखाए जिससे स्पष्ट होता था कि प्रसव के पश्चात् दूसरे महीने में ऋतुस्राव प्रारम्भ होना अपवादस्वरूप ही है। अधिकांशतः तो प्रसव के पश्चात् ऋतुस्राव होने में ६ माह से एक वर्ष का समय लग जाता है। स्तनपान कराने वाली माताओं में तो यह रजःस्राव प्रायः स्तनपान बंद करने के पश्चात् होता है।

Here are some answers given by some mothers during an interview session makes it very clear that a belief that the menstruation will start by 2nd month after delivery is not supported by science and facts-

'I got my first period when my daughter was 6 or 7 months old.'

'I didn't get my period until my daughter was 1.'

'I didn't get my period back until 13 months after having my daughter.'

'I didn't get my period until my son was 14 months old.'

'I didn't get my period for 7.5 months.'

स्पष्ट है कि वैज्ञानिकों का मानना है कि अगर माता स्तनपान कराती है तो प्रसव पश्चात् माँ एक वर्ष तक भी रजस्वला न हो यह आश्चर्य का विषय नहीं है और स्तनपान नहीं भी कराये तो भी दूसरे महीने रजस्वला हो जाय इसकी संभावना बहुत कम है, अतः ऋषिवर ने 'पश्चात् जब दूसरे महीने में रजस्वला हो, तब शुद्धि होने पर उसी प्रकार ऋतुदान देवे' प्रूफ जांचने के समय इसमें से 'दूसरे महीने' इसे निकाल कर वाक्य को पूर्ण शुद्ध व तथ्य परक कर दिया, –अशोक आर्य .

(सत्यार्थ प्रकाश की पृष्ठ संख्या द्वितीय संस्करण (१८८४) की हैं)

सत्यार्थ सन्देश के प्रवेशांक को लेकर जिस प्रकार के उत्साहवर्द्धक सन्देश विद्वज्जनों, अधिकारियों व आर्यजनों से प्राप्त हो रहे हैं उन सभी के प्रति हम आभार प्रकाशित करते हैं। आपका यही स्नेह व सहयोग हमारा सम्बल है।

–सम्पादक

....

ऋषि बोधोत्सव दिनांक १९ फरवरी से २१ फरवरी २०१२ तक ऋषि जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है।

प्रतिस्वर

सत्यार्थ सन्देश का प्रवेशांक मिला। इस स्तुत्य व प्रशंसनीय कार्य के लिए बधाई। स्वामी दयानन्द जी द्वारा अपने सारे महत्वपूर्ण ग्रन्थ जन सामान्य की बोलचाल की भाषा हिन्दी में प्रणीत करना एक महत्वपूर्ण कदम था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में प्रूफ न देखने के कारण बहुत से अवैदिक मान्यताओं से युक्त प्रक्षेप कर दिए गए थे। अतः द्वितीय संस्करण महर्षि ने पूरी सावधानी के साथ छपवाया। यही द्वितीय संस्करण सदैव प्रामाणिक माना जाता रहा है। १९९० के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश में अनेक प्रकार के परिवर्तन कर कुछ संस्करण छापे गये जो गंभीर चिन्ता का विषय है। ऐसे वातावरण में 'सत्यार्थ सन्देश' सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा में चट्टान की भाँति अडिग रहेगा। ऐसा पूर्ण विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित

आनन्द आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

श्री छोटूसिंह जी आर्य की पाँचवी पुण्य तिथि के अवसरपर २३ फरवरी २०१२ को कैप्टन देवरत्न आर्य जी कोकर्मवीर आर्य श्रेष्ठ पुरस्कार से सम्मानित किया जावेगा।

– शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट, अलवर

नवलखा महल स्थित भव्य यज्ञ शाला

मातृभाषा का प्रभाव

अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ने वाले हिंदी भाषी छात्रों के गणित और विज्ञान में कमजोर होने की बात अकसर की जाती है। आमतौर पर वे अंग्रेजी में इसे रटते पाये जाते हैं। यह कुछ हद तक सच भी है। यहाँ ज्ञान को समझकर ग्रहण करने में विदेशी भाषा बाधक बनती है। परिस्थितिजन्य सामाजिक व आर्थिक मुश्किलों के बावजूद हिंदी एवं स्थानीय भाषा में पढ़ने वाले छात्र विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर परिणाम देते हुए देखे जा सकते हैं। अगर इन आम घरों के सामान्य बच्चों को उचित अवसर और समुचित वातावरण प्राप्त हो तो ये आश्चर्यजनक परिणाम दे सकते हैं। वर्षों से विशिष्ट वर्ग द्वारा जनित व पोषित अंग्रेजी के प्रभुत्व से बाहर निकलकर देखें तो इस सत्य व तथ्य के और भी कई रोचक पहलू नजर आयेंगे। हिंदी मीडिया की टीआरपी (लोकप्रियता का सूचक) का ग्राफ तेजी से ऊपर चढ़ा है। हिंदी समाचारपत्र की प्रसार संख्या अंग्रेजी से बहुत आगे निकल चुकी है। पिछले कुछ वर्षों में हालात इतने बदल चुके हैं कि अंग्रेजी के बड़े से बड़े अंध-समर्थक लेखक-चिंतक भी हिंदी जगत् में लिखने-दिखने के लिए आतुर नजर आते हैं।

अंग्रेजी में दिन-रात सोने-खाने वाला यह वर्ग अब हिन्दी में बोलने के लिए मजबूर है। बाजार को किसी से मतलब नहीं, वो तो सिर्फ और सिर्फ लाभ की भाषा जानता है, तभी तो विज्ञापन के क्षेत्र ने भी हिंदी को अपना लिया है। यह दीगर बात है कि हिंदी से खाने-कमाने वाला बालीवुड अंग्रेजी नाम की साँसें लेता है। लेकिन यह भी सच है कि ऐसे जबरन थोपे गये अंग्रेजपरस्त कलाकार हिंदी भाषा की अज्ञानता व कमजोरी के कारण ही सफलता की वो ऊँचाइयाँ हासिल नहीं कर पाते जो वे प्राप्त कर सकते थे। संक्षिप्त में कहें तो स्थानीय भाषा का वर्चस्व बढ़ा है।

राजनीतिज्ञों को तो जनता से सीधे संपर्क साधने के लिए मजबूरीवश उनकी भाषा में ही बात करनी पड़ती है। असल में स्थानीय भाषा में ही अवाम के दिल को पढ़ा जा सकता है। जो राजनेता ऐसा नहीं करते वे हवा-हवाई बनकर रह जाते हैं। इतिहास गवाह है, क्रांतियाँ और आंदोलन भी देशी भाषाओं में ही अँगड़ाई लेती हैं। नारे और देशभक्ति के गीत मातृभाषाओं में ही लिखे जाते हैं। सरल शब्दों व स्पष्ट अर्थों में ही इनकी लोकप्रियता का राज छिपा होता है। इन शब्दों का भावार्थ जब सीधे दिलोदिमाग को झकझोड़ता है तो जन-जन एकजुट होकर सड़कों पर उतर आता है। इन शब्दों में छिपे मूल विचार अपनी भाषा में होने के कारण सीधे-सीधे समझ आते हैं जो फिर जन-जन को उद्वेलित करते हैं। साथ ही आक्रोशित और क्रोधित भी करते हैं। दया और दुआ भी दिल की भाषाओं में ही ली और दी जाती है। प्यार और दुश्मनी व्यक्त करने के लिए भी अपने ही शब्द अधिक प्रभावशाली होते हैं। करुणा अपने शब्दों में ढलकर ही हृदय को छूती है और आँखों से आँसू बनकर बहने लगती है। अपनी भाषा में देखी जाने वाली फिल्मों में ही सिनेमाघरों के अंदर सिसकियों की आवाज आती है तो ठहाके भी यहीं लगते हैं। क्या आपने किसी अंग्रेजी फिल्म में खुलकर हँसते और रोते हुए भारतीय दर्शकों को देखा है? नहीं देखा होगा। हाँ, यह अमूमन धीरे से फुसफुसाते और मुस्कुराते हैं। और अपनी कमजोरी छिपाने के लिए इसे ही सभ्यता का नाम दे दिया जाता है। फिल्मी गाने अपनी भाषा में ही गुनगुनाये जाते हैं।

गीत मातृभाषा में ही याद हो पाते हैं। लोकगीत ठेठ स्थानीय भाषा में सालों साल पीढ़ियों में जिंदा रहते हैं। इन्हें याद करने और रखने के लिए किसी विज्ञापन एजेंसी की जरूरत नहीं पड़ती। स्थानीय गीत रुलाते हैं,तो यही सोचने के लिए मजबूर भी करते हैं। आनंद का अहसास और प्रेम की पराकाष्ठा इन्हीं के माध्यम से संभव है। इनकी अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही अपना रंग दिखाती है। विदेशी गानों को रट के कुछ पल के लिए चहका और बहका तो जा सकता है मगर उन गीतों से उत्पन्न मस्ती व जोश स्थायी नहीं होता। सारी भावनाएँ यंत्रवत् लगती हैं। जबकि अपनी भाषा में लिखा व गाया गया गीत–संगीत दूध में शक्कर की तरह घुलकर शरीर में प्रवेश करते ही लहू में दौड़ने लगता है। यह जीवन की अनुभूति कराता है और कोशिकाओं में तरंग उत्पन्न कर देता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भाषा के इस मनोविज्ञान को बहुत शीघ्र समझ लिया था। मुट्ठी भर तथाकथित पण्डितों की पकड़ में जन–सामान्य त्रस्त इसी कारण था, कि वेदादि शास्त्रों में उनकी आस्था तो थी परन्तु बोलचाल की भाषा में न होने के कारण वे न तो उनको पढ़ सकते थे, न समझ सकते थे। अतः 'वेद' के नाम पर यह 'पण्डित वर्ग' मनमानी, यहाँ तक कि वेद–विरुद्ध व्यवस्थाएँ देता रहा और पीड़ित अपमानित व त्रस्त होते हुए भी जन–मानस इसे वेदाज्ञा समझ मानता रहा। स्वामी जी ने एक ऐसा कार्य किया जो उनसे पूर्व किसी ने सोचा भी न था। उन्होंने वेदों का भाष्य आर्य–भाषा (हिन्दी) में कर उसे 'पण्डितों' की कारा से मुक्त कर, जन–जन के लिये उपलब्ध करा दिया। उन्होंने देववाणी को जनवाणी बना दिया। स्वामी जी संस्कृत के महापंडित थे, मातृभाषा गुजराती थी, पर उनका सारा महत्वपूर्ण साहित्य उन्होंने हिन्दी में ही लिखा। हिन्दी के शैशवकाल में स्वामी जी ने उसे अँगुलि पकड़कर चलना सिखाया।

– अशोक आर्य

इतिहास गवाह है, किसी भी देश ने अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं लड़ी। हिंदुस्तान में भी महात्मा गाँधी इसलिए अधिक सफल और लोकप्रिय हुए क्योंकि वो अन्य समकालीन नेताओं के विपरीत अपनी भाषा में बात कर अवाम से सीधा संपर्क साधते थे। आज भी अंग्रेजीपरस्त अधिकांश नेता आमतौर पर राज्यसभा के लिए नामित हो पाते हैं जबकि दूसरी तरफ लोकसभा के लिए जनता द्वारा सीधे चुने हुए राजनीतिज्ञ अपनी–अपनी भाषा में ही बात करते हुए देखे जा सकते हैं। वर्तमान लोकप्रिय नेताओं की सूची में भी वही लोग शामिल हैं जो देशी भाषाओं में बात करते हैं। क्या ही अच्छा होता जो हमारी न्यायिक संस्थायें स्थानीय भाषा में कार्य करतीं। बेगुनाह कम से कम अपनी बात आसानी से रख तो पाते। उन्हें भाषा और शब्दों के माध्यम से गुनहगार साबित करने में मुश्किल होती। ऐसा ही कुछ अन्य प्रजातांत्रिक संस्थाओं में भी हो जाता तो शायद सारा शासन–तंत्र जनप्रिय हो सकता था।

इन सब तथ्यों के बावजूद भी हमारा स्थानीय भाषा से दूरी बनाये रखना एवं अंग्रेजी के प्रति प्रेम समझ से परे है। जबकि सभी शासकीय व्यवस्थाओं में शासक के द्वारा स्थानीय भाषा का प्रयोग हर लिहाज से बेहतर साबित होता है। यह प्रभावकारी, असरदार, दूरगामी और सरल व सुगम होता है। इससे शासन सुचारु रूप से चलाया जा सकता है। अवाम तक अपनी बात आसानी से पहुँचायी जा सकती है। आम जनता के असंतोष को समझा और समझाया जा सकता है। उससे सार्थक बातचीत की जा सकती है। इन सबके बावजूद हिंदुस्तान का सिंहासन अगर अंग्रेजी शब्दों से घिरा पाया जाता है तो आश्चर्य होता है। शासक और शासित के बीच की दूरी, जो आज एक खाई में परिवर्तित होती नजर आ रही है, उसके पीछे विदेशी भाषा एक प्रमुख कारण दिखाई देती है। अवाम की पीड़ा को समझने के लिए उसकी भाषा को अपनाना जरूरी होता है। हर एक परिस्थिति में संपर्क स्थापित करना आसान होता है। उसके दुखदर्दों पर मरहम लगाने के लिए प्यार के दो बोल जरूरी हैं। ऐसे शब्द किस काम के जो उसे समझ ही न आये। यह तो वही मिसाल हुई कि भूखा रोटी के लिए तरस रहा है और उसे केक खाने के लिए कहा जा रहा है।

अन्ना का सफल जन–आंदोलन मातृभाषा प्रयोग का जीवंत उदाहरण बन सकता है। क्या वास्तव में देशी भाषा का उपयोग और पारंपरिक नारों के प्रयोग ने इसे लोकप्रिय करने में अहम भूमिका निभाई? इसका उत्तर वर्तमान के सामाजिक व

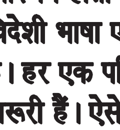

श्रीमद्दयानन्द जयन्ती एवं बोध दिवस के प्रेरक अवसर पर विश्वभर के भाई–बहनों को शुभकामनाएँ।
प्रभुकृपा करें हम इस अवसर पर "विष पीकर अमृत प्रदान करने वाले"
महर्षि के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु संकल्पित हों।

– विजय शर्मा, उपाध्यक्ष–न्यास एवं समस्त न्यास परिवार

विश्वास

एक पिता अपने पुत्र के साथ बाग में भ्रमण कर रहा था। पिता थक गया तो बैंच पर बैठ गया और बालक खेलने में व्यस्त हो गया। एक बहरूपिया वेष बदलकर डरावने कपड़े पहन कर घूम रहा था। बालक उसे देखकर डर गया और रोते हुए भाग कर अपने पिता की गोद में जा बैठा। आश्चर्य की बात थी कि जो बालक अभी तक भयभीत था, पिता की गोद में आते ही उस बहरूपिये को अँगूठा दिखाने लगा, उसे अब भय का लेश भी नहीं था। कारण? अपने पिता की गोद में बैठ, उसे अपने को पूर्ण सुरक्षित होने का विश्वास था।

अब देखें हमारी क्या स्थिति है? हम सब मानते हैं कि परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिमान, सर्वरक्षक, पक्षपात् रहित न्यायप्रदाता और परम दयालु है, फिर भी हम प्रतिपल आशंकित हैं, भयग्रस्त हैं, कारण कि हमें अपनी आस्था पर पूर्ण विश्वास नहीं। प्रस्तुत लघु कथा एक बालक के अटल विश्वास की कहानी है। प्रश्न यह नहीं है कि बरसात हुयी या नहीं, परन्तु बालक का विश्वास ही प्रेरणा दायक है। – अशोक आर्य

बालक की छतरी

एक समय महाराष्ट्र में वर्षा न होने से भीषण जलकष्ट हुआ पशु और मनुष्य दोनों ही त्रस्त हो गये । तब सभी ने मिलकर वर्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने का निश्चय किया! एक निश्चित स्थान पर सभी एकत्र हुए । इतने में एक बालक छतरी लिये आया और वह भी सबके साथ प्रार्थना करने लगा । लोगों ने पूछा,

'यह छतरी क्यों लाये' तो उसने उत्तर दिया –

'जब आप सभी लोग ईश्वर के पास वर्षा के लिये प्रार्थना करने आये हैं तो मैं भी उसी आशा में चला आया – सामान्य लोग भी किसी वस्तु के माँगने पर हमें निराश नहीं करते तो फिर ईश्वर के यहाँ क्या कमी है ? वर्षा आयेगी इसलिये उससे बचने के लिये छतरी ले आया।'

कई लोग तो इस पर उसका मजाक उड़ाने लगे। परन्तु बालक की श्रद्धा से प्रसन्न होकर प्रभु ने वर्षा भेजी। सब भीगने लगे, परन्तु बालक छतरी के नीचे सकुशल घर लौट आया। (भारती से साभार)

प्रस्तुति – नारायण मित्तल, न्यू राजेन्द्र नगर, उदयपुर

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

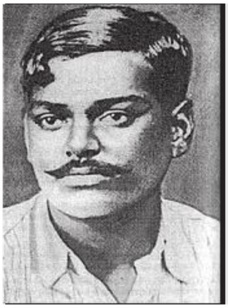

महान् क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद

लेखक
वचनेश त्रिपाठी "साहित्येन्दु"

मध्यप्रदेश की रियासत अलीराजपुर के भावरा ग्राम का चौदह वर्ष का किशोर बिना माता पिता को बताए एक रात घर छोड़कर मुम्बई जाने वाली रेलगाड़ी में जा बैठा । उसे यह भी पता नहीं था कि वह गाड़ी कहाँ जायेगी । वह नाराज होकर घर से भागा था। क्योंकि उसके पिता पंडित सीताराम तिवारी ने रियासत के बाग से बिना पूछे आम तोड़ने पर उसकी खूब पिटाई की थी। उस बाग की रखवाली आठ रु.महीने के वेतन पर उस किशोर के पिता ही करते थे। देशी बारूद खरीदकर खिलौने में भरकर तोप चलाना उस किशोर का प्रिय खेल था। वह उन चुराए गए आमों को बेचकर मिलने वाले पैसों से देशी बारूद खरीदना चाहता था। किन्तु पिता की निगाह उन आमों पर पड़ी तो उन्होंने अपने पुत्र को इतना मारा कि माँ व्याकुल हो उठी। अनन्तर उस बालक को द्वार से बाहर ठेलकर द्वार बंद कर लिया और माता जगरानी देवी से कहा कि खबरदार! दरवाजा मत खोलना वरना तुम्हें भी मार दूंगा।

वह किशोर रात १०.०० बजे तक इस आशा से बाहर अंधेरे में खड़ा प्रतीक्षा करता रहा कि अभी पिताजी उसे बाहर आकर मनायेंगे और अंदर ले जायेंगे किन्तु देर रात तक भी द्वार बंद ही रहा तो वह वहाँ से दूर गाँव में अपने एक रिश्तेदार मनोहरलाल द्विवेदी के घर चला गया और दूसरी रात जब उसी रिश्तेदार की पत्नी को यह कहते सुना कि इसे इसके घर क्यों नहीं भेज आते तो भोर होते ही वह उस घर को भी छोड़कर दूर के एक रेलवे स्टेशन जा पहुँचा । वहाँ खड़ी रेलगाड़ी में वह बिना टिकट बैठ गया। रेल में बैठे-बैठे उसे नींद आ गई और काफी समय बाद जब नींद खुली तो उसे पता चला कि वह मुम्बई पहुँच गया है। वहाँ उसने एक होटल में बर्तन माँजकर और बन्दरगाह पर जहाज में दूध के डिब्बे ढोकर कुछ माह बिताए । इसके पश्चात् खिन्न होकर काशी चला गया। वहाँ संस्कृत पाठशाला में भर्ती होकर लघु सिद्धान्त कौमुदी और अमर कोष जैसे संस्कृत ग्रन्थ रटने लगा।

वहाँ ब्राह्मण छात्रों को कुछ धर्म सत्रों में एक समय निःशुल्क भोजन मिल जाता था। रात के भोजन के बजाए मंदिरों में संध्या आरती के प्रसाद पाकर ही काम चलाना पड़ता था। उसी बीच गाँधी जी का 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' चला तो जोश में आकर वह १४ वर्षीय छात्र भी उसमें कूद पड़ा। जब उसे खरेघाट की अदालत में पेश किया गया तो देखा गया कि उसके हाथ इतने छोटे थे कि वे बन्द हथकड़ियों में से बाहर निकल जाते थे।

अदालत में पारसी दंडाधिकारी ने उसे फटकारते हुए कहा अभी हाथ भर का तो है नहीं, चला है आन्दोलन करने। दंडाधिकारी ने उससे पूछा 'तुम्हारा नाम क्या है' उसने उत्तर दिया 'आजाद' दंडाधिकारी ने फिर पूछा 'तुम्हारे बाप का नाम' उत्तर मिला 'स्वाधीनता'। जब तीसरा प्रश्न हुआ 'घर कहाँ है' जवाब मिला 'जेलखाना'। दंडाधिकारी ने इन उत्तरों से क्रुद्ध होकर उस किशोर छात्र को पन्द्रह बेतों की सजा सुना दी। काशी के केन्द्रीय कारागार में आजाद के सब कपड़े उतार कर लकड़ी की एक चौखट के साथ हाथ पाँव बाँधकर पानी में भीगे बेतों से निर्ममता से प्रहार किए गए थे। पहले ही प्रहार से पीठ और नितम्बों से खून छलछला आया। फिर भी बालक आजाद हर प्रहार पर वन्देमातरम् और इंकलाब के नारे लगाता रहा।

आगे चलकर यही छात्र चन्द्रशेखर आजाद के नाम से काकोरी कांड से लेकर साण्डर्स वध कांड और असेम्बली बम कांड आदि अनेक मामलों में अपनी सक्रिय साहसिक भूमिका निभाते हुए इलाहाबाद में कम्पनी बाग में २१ फरवरी १६३१ को शहीद हुआ । दंडाधिकारी को प्रथम बार अपना कल्पित नाम आजाद बताकर यह महान् क्रान्ति सैनानी चन्द्रशेखर आजाद

मृत्यु के पश्चात् का प्रथम चित्र

ब्रिटिश पुलिस के लिए एक आतंक थे,जो उन्हें जिन्दा या मुर्दा हर कीमत पर अपने रास्ते में से हटाने की हर कोशिश कर रही थी। २७ फरवरी १९३१ को यशपाल को रूस भेजे जाने संबंधी योजनाओं को अन्तिम रूप देने के लिए इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में वह अपने साथियों के साथ चर्चा कर रहे थे, मुखबिर की सूचना पर उन्हें घेर लिया गया। आजाद ने अपने बाकी साथियों को वहाँ से निकलने का आदेश दिया और खुद अंग्रेजों से मोर्चा लेने लगे। उन्होंने तीन पुलिस वालों को तो मौत के घाट उतार दिया और सोलह को घायल कर दिया। अन्त में जब एक गोली शेष बची तो उन्होंने मृत्युपर्यन्त आजाद रहने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करते हुए आखिरी गोली स्वयं को ही मार ली। पुलिस आजाद से इतनी भयभीत थी कि उनके मृत शरीर पर कई गोलियाँ दागने के काफी देर बाद ही पास पहुँचने की हिम्मत जुटा पाई थी। अंग्रेजों ने चुपके से उनका अन्तिम संस्कार कर दिया लेकिन आजाद की शहादत ने देश में एक लहर फैला दी। क्रान्तिकारियों ने शमशान से आजाद की अस्थियाँ सम्मानपूर्वक निकालते हुए शहर में जुलूस निकाला और इस जूलूस में इलाहाबाद समेत कई जिलों की जनता उमड़ पड़ी। अन्तिम विदाई सभा को शचीन्द्रनाथ सान्याल की पत्नी और जवाहर लाल नेहरू ने सम्बोधित किया और इस सच्चे सपूत को विदाई दी।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सन्देश

श्री रतिराम शर्मा
सिलीगुड़ी

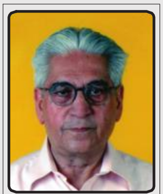

श्री भवानीदास आर्य
जयपुर

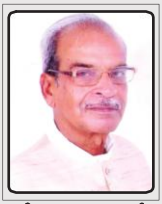

श्री आनन्द कुमार आर्य
कोलकाता

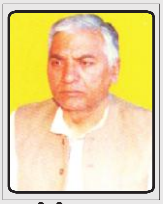

श्री दीनदयाल गुप्त
कोलकाता

श्री बी.एल. अग्रवाल
जयपुर

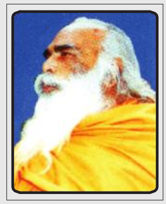

स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती
चित्तौड़गढ़

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
अहमदाबाद

श्री चन्दूलाल अग्रवाल
अहमदाबाद

श्री मिठाईलाल सिंह
मुम्बई

श्री आर. डी. गुप्ता
गाजियाबाद

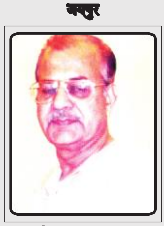

डॉ. देवरत्न आर्य
मुम्बई

श्री नारायणलाल मित्तल
जयपुर

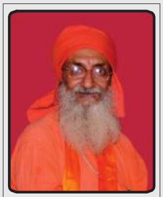

स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती
सिक्कावास

श्रीमती पुष्पा गुप्ता
उदयपुर

श्रीमती शारदा गुप्ता
उदयपुर

(स्व.) पं. पन्नालाल पीयूष
उदयपुर
पावन स्मृति में - सुधाकर पीयूष(पुत्र)

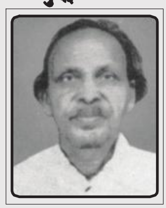

(स्व.) आचार्य प्रेमभिक्षु
मथुरा
पावन स्मृति में - [illegible] (पुत्रवधु)

आर्य समाज
गाँधीधाम
गुजरात

आर्य परिवार
संस्था
कोटा-राजस्थान

श्रीमती नीता गर्ग, प्रधानाध्यापिका, डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, उदयपुर ने १० दिन में १०० सदस्य बना कीर्तिमान स्थापित किया है, बहिन जी को साधुवाद । इसी प्रकार बहिन शारदा जी गुप्त ने १०० आजीवन सदस्य बनाने का संकल्प लिया है। ऐसी जिजीविषा से युक्त साथियों के होते सफलता सुनिश्चित है । आपसे भी यही आशा है ।

व्याकरणशास्त्र और भाषाविज्ञान का मूल वेद

लेखक - प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

'व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्' अर्थात् जिस शास्त्र की सहायता से शब्दों के प्रकृति और प्रत्यय का विवेचन किया जाता है उसे व्याकरण कहते हैं। अर्थात् शब्द (Word) कैसे बनता है? उसका Root अर्थात् प्रकृति क्या है और उसमें कौन सा प्रत्यय Suffix लगा है, इसका विवेचन व्याकरण विद्या का विषय है।

यजुर्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि "प्रजापति ने सत्य और असत्य का, साँच और झूठ का व्याकरण किया अर्थात् विश्लेषण किया। उसने सत्य को श्रद्धा के योग्य और असत्य को अग्राह्य तथा त्याज्य घोषित किया।"

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धाꣳ सत्ये प्रजापतिः।। यजु. १९.७७

व्याकरणशास्त्र के तपःपूत आचार्य महर्षि पतंजलि ने व्याकरणशास्त्र का मूल वेद को बताते हुए ऋग्वेद का एक मन्त्र उद्धृत किया है और उसकी व्याकरणपरक व्याख्या भी की है। मन्त्र है-

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश।। ऋग्वेद ४.५८.३

इसका अर्थ करते हुए पतंजलि मुनि कहते हैं- "एक वृषभ अर्थात् एक बैल ऐसा है जिसके चार सींग, तीन पैर, दो शिर तथा सात हाथ हैं। वह वृषभ तीन स्थानों में बँधा हुआ बार-बार बोलता है। वह वृषभरूपी महान् देव मरणशील मनुष्यों में प्रविष्ट है। वह बैल जिसे वैदिक संस्कृत में वृषभ कहा गया है वह और कोई नहीं, शब्द ही वृषभ है। उसे 'वृषभ' इसलिए कहा जाता है कि वह कामनाओं की वर्षा करने वाला है। इसी शब्दरूपी वृषभ के चार सींग-नाम अर्थात् संज्ञा, आख्यात् अर्थात् क्रिया, उपसर्ग और निपात अर्थात् अव्यय हैं। तीन पैर वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत्काल ये तीन काल हैं। दो शिर नित्य और अनित्य दो प्रकार के शब्द हैं। उसके सात हाथ-सात विभक्तियाँ हैं। यह तीन स्थान उरस् (हृदय) कण्ठ और शिर (मूर्धा) में बँधा हुआ है। ऐसा शब्दरूपी महादेव, मनुष्यों (जो मर्त्य हैं)में प्रविष्ट है। अथर्ववेद के प्रथम मन्त्र में ही व्याकरणशास्त्र का मूलवीज ऋषियों को दृष्टिगोचर हुआ था।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।। अथर्व १.१.१

(इस मन्त्र का देवता वाचस्पति है।)

अर्थात्-वाणी का पति वाचस्पति परमात्मा मेरे अन्दर त्रिषप्ताः ३x७=२१ शब्द रूपों जो सु औ जस् से लेकर दि. ओस् सुप् तक सातों विभक्तियों के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इन तीनों रूपों से गुणा करने पर २१ शब्दरूप बनते हैं। इसी प्रकार तिप् तस् झि आदि १८ तिङ्.प्रत्यय और अतृ, वसु, आन ये तीन धातुओं के आगे आकर २१ धातुरूप बनते हैं। इन सभी शब्दरूपों और क्रियारूपों को परमात्मा मेरे अन्दर धारण करावे। 'त्रिषप्ताः' अनेकार्थवाचक भी है।

सायणाचार्य ने ऋग्वेद (१.१६१.१२) के एक मन्त्र में आये 'त्रिषप्त' शब्द का विविध अर्थ किया है। अतः शतशः और सहस्रशः जो शब्दरूप या धातुरूप बनते हैं उस सम्पूर्ण वाणी के विस्तार का आधान वाचस्पति परमेश्वर मुझमें करे। इसीलिए लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में 'व्याकरण परिषत्' का प्रार्थना मन्त्र इसी मन्त्र को १९२७ ई. में नियत किया गया था। इस मन्त्र में तीन और सात शब्द पृथक् पृथक् करने पर तीन काल, तीन वचन, तीन लिङ्.ग, उरस्, कण्ठ और शिर तीन उच्चारण स्थान, सात विभक्तियों तथा तीन और सात का योग करने पर दस संख्या दस लकारों का भी बोधक या द्योतक बन जाता है।

भाषा विज्ञान या भाषाशास्त्र का मूल (बीज) भी वेद में ही प्राप्त होता है। भाषा की उत्पत्ति का प्राचीनतम सिद्धांत 'दिव्योत्पत्तिवाद' (Divine Theory) है।

''देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।'' ऋग्वेद ८.१००.११

वस्तुओं के नामधेयों को धारण करने वाली (भाषा) को बृहस्पति (परमेश्वर) ने सर्वप्रथम प्रेरित (प्रदान) किया-

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं दधानाः। ऋग्वेद १०.७१.१

ऋग्वेद के 'वागाम्भृणी सूक्त' (१०/१२५) में वाग्देवी कहती है -

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।। ऋग्वेद १०.१२५.५

अर्थात्-वाक्तत्त्व या भाषा ही वह दिव्य ज्योति है, जो मानव को ऋषि, देवता या विद्वान् बनाती है।

भाषा के संस्कार और परिष्कार के सम्बन्ध में ऋग्वेद का वचन है- जैसे चलनी से सत्तू छानकर स्वच्छ किया जाता है, उसी प्रकार विचारशील पुरुष अपने मन या प्रज्ञान की चलनी से वाणी को छानकर पावन बनाते हैं-

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।। ऋग्वेद १०.७१.२

वाणी की गूढ क्षमता के सम्बन्ध में ऋग्वेद का उद्घोष है-

मूर्ख व्यक्ति वाणी को देखता हुआ भी नहीं देख पाता और सुनता हुआ भी नहीं सुन पाता है। किन्तु वही वाणी सरस्वती के समाराधक सुविज्ञ के सामने अपने रहस्य को, अपने स्वरूप को उसी प्रकार प्रकट कर देती है, जिस प्रकार प्रेम में पगी प्रेयसी पत्नी अपने पति के समक्ष अपना अनावृत सौन्दर्य समर्पित करती है-

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः।। ऋग्वेद १०.७१.४

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के शब्दों में ''कहीं ओजस्वी और स्फुरित होती हुई पदावली तो कहीं अतिशय कोमल और मसृण शब्दविन्यास- इस प्रकार सुकुमार और विचित्र दोनों काव्यमार्गों पर सहजगति से ऋग्वेद के कवि अग्रसर होते हैं। जीवन में माधुर्य का अवतरण कर देते हैं। माधुर्य की कामना करते हुए ऋषि अपनी वाणी में -

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। ऋग्वेद १.९०.६
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। ऋग्वेद १.९०.७
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। ऋग्वेद १.९०.८

(संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, पृ.२० प्रथमसंस्करण, २००१ ई.)

मधुमाक्षिकाएँ उपवन में एक-एक पुष्प पर बैठकर उसका रसपान करती हैं। और उस रस को लेजा कर मधुकोश में संचित कर लेती हैं। शनैः-शनैः मधुकोश में इतना मधु एकत्र हो जाता है कि वह बहुतों की रसना को मधुर कर सकता है। आयें! इस संग्रह की कला को मधुमाक्षिकाओं से हम भी सीखें, हम भी अपने जीवन के मधुकोश में मधु को संचित करें। प्रकृति की जिस वस्तु में भी मधु का कोई कण है, जिस मानव के भी जीवन व्यवहार में माधुर्य है, हम कण-कण संग्रहीत करें। जैसे मधुमाक्षिकाएँ मधुर रस को ही गृहीत करती हैं, कटु-रस को नहीं, वैसे हम भी केवल मधुरता को ही ग्रहण करें, कटुता को नहीं। यह माधुर्य का वर्चस हमें सतत् प्राप्त होता रहे और प्रभु कृपा मिलती रहे।

स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती

समाचार

सत्यार्थ-सन्देश का लोकार्पण

ऋषिवर का सन्देश घर-घर पहुँचायेगा सत्यार्थ-सन्देश - स्वामी (डा.) ओम् आनंद सरस्वती

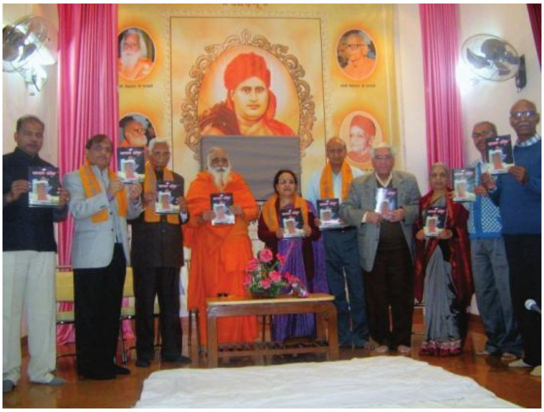

'सत्यार्थ-सन्देश' का भव्य लोकार्पण दिनांक १.१.२०१२ को नवलखा महल,उदयपुर स्थित माता लीलावंती सभागार में पूज्य स्वामी ओम् आनंद सरस्वती, अधिष्ठाता पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चितौड़गढ़ के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर राजस्थान साहित्य अकादमी की पूर्व अध्यक्ष डा. अजित गुप्ता, प्रख्यात साहित्यकार व अमेरिकन हास्पीटल के प्रबंध निदेशक डा. देव कोठारी, एवं अवकाश प्राप्त आबकारी आयुक्त श्री जे.एस.सिंघवी (नवलखा महल में पूर्व में चलने वाले आबकारी विभाग के आप आयुक्त थे, महाराणा सज्जन सिंह जी की मोहर लगी हुई सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण की प्रति आपने न्यास को भेंट की है) उपस्थित थे। पूज्य स्वामी जी व अन्य सभी ने इसके प्रचार- प्रसार में सब प्रकार से जुट जाने का आह्वान किया।

श्री तिलकराज आर्य का निधन सम्पूर्ण आर्य-जगत् की क्षति

आर्य प्रकाशन के संस्थापक अध्यक्ष श्री बाबू तिलकराज जी का निधन उनके परिवार , भाई संजीव आर्य आदि की निजी क्षति तो है ही, पर वस्तुतः उनका जाना आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। स्मृतिशेष तिलक राज जी ने साहित्य के क्षेत्र में आर्यसमाज की जो सेवा की, वह अविस्मरणीय है। न्यास परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि।

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सन्देश' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

सत्य की आँच को सहने के लिये स्थिर मन और अपार धैर्य की आवश्यकता होती है।

डा. रघुवीर वेदालंकार 'पं गंगा प्रसाद उपाध्याय' पुरस्कार से सम्मानित

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा. रघुवीर वेदालंकार का उक्त पुरस्कार से सम्मान किया गया जो कि सर्वथा योग्य है. डा. रघुवीर वेदालंकार सत्यार्थ प्रकाश के मानक संस्करण के संपादक भी हैं, सत्यार्थ-सन्देश परिवार डा. साहब के निरामय आयुष्य के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है .

वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य कुलपति बने

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि हमारे न्यास के न्यासी तथा भामाशाह के नाम से सुख्यात, अनेक संस्थाओं, विशेष रूप से गुरुकुलों को अर्थ-सहायता से सुदृढ़ करने में सतत् सहयोगी वानप्रस्थ सत्यनारायण जी आर्य को गुरुकुल हरिपुर का कुलपति

दयानन्द धाम, ईसवाल, उदयपुर में मकर संक्रांति पर्व मनाया गया

आर्य पर्व पद्धति के अनुसार मकर-संक्रांति का पावन पर्व सभी आर्यों ने सामूहिक रूप से दयानन्द धाम में मनाया। यज्ञोपरांत श्री विनोद राठौड़ के निर्देशन में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों के साथ युवकों महिलाओं तथा बुजुर्गों ने भी भाग लिया। उल्लेखनीय है कि यह वही स्थल है जो श्रद्धेय महाशय धर्मपाल जी ने वैदिक संस्कृति के प्रसारणार्थ क्रय किया है। मकर संक्रांति पर्व के महत्व को समझने के पश्चात् सभी ने सामूहिक भोज किया तदुपरांत आयोजन का समापन हुआ।

सामवेद सम्मेलन १७-१८ मार्च को, मुम्बई में

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्त्वावधान में पूर्व में आयोजित वेद सम्मेलनों की भव्य परम्परा में दिनांक १७ से १८ मार्च २०१२ को 'सामवेद-सम्मेलन' आयोजित किया जा रहा है। देश भर से सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् इस अवसर पर उपस्थित होंगे।

- डॉ. सोमदेव शास्त्री

कुछ इधर की कुछ उधर की

कालेधन संबंधी प्रयास जल्द कामयाब होंगे-केन्द्र

वित्त मंत्रालय ने कहा कि कालेधन के खिलाफ उसकी जंग पाँच साल में रंग लायेगी। मंत्रालय के अनुसार लगभग दस देशों ने स्वतः जानकारी दी है और इसमें कार्यवाही की जा रही है। इन सूचनाओं में गुप्त बैंक खातों की जानकारी होने के सवाल पर कहा कि इसमें बैंकिंग सूचना भी शामिल है।

ऐसा अखबार जिसमें सभी बाल पत्रकार

मध्यप्रदेश में एक स्वयंसेवी संस्था ने 'बच्चों की पहल' नामक एक त्रैमासिक अखबार शुरू किया है। विशेष बात यह है कि इस अखबार के सभी रिपोर्टर स्कूली बच्चे हैं। होशंगाबाद जिले की सोहागपुर तहसील में यूनिसेफ की पहल पर दलित संघ नामक स्थानीय स्वयंसेवी संस्था ने यह पहल की है।

दो पहियों पर देखी सारी दुनिया

सामान्य से हटकर जीवन जीने के लिए लोग क्या कुछ नहीं कर बैठते। मध्यप्रदेश के प्रशान्त बोलवरकर साइकिल से ही दुनिया घूमने निकल पड़े। आज प्रशान्त दुनिया के करीब ८६ देशों में साइकिल के जरिए लगभग १.५ लाख किलोमीटर का सफर पूरा कर चुके हैं। प्रशान्त पहले भी भारतवर्ष में मोटरसाकिल से साढ़े सात लाख किलोमीटर का सफर कर चुके हैं। बैंक की नौकरी से सन् २००० में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद प्रशान्त ने पहली बार १२ फरवरी १९८५ को २८ देशों की यात्रा शुरू की थी।

चीन से प्रतिस्पर्द्धा में डरें नहीं

केन्द्रीय गृहमंत्री पी.चिदम्बरम के अनुसार चीन के साथ भारत का व्यापार बढ़ रहा है। भारत और चीन दो बड़े देश हैं। भारत को चीन से प्रतिस्पर्द्धा में डरना नहीं चाहिए।

केरेबीयाई देश

त्रिनिदाद की प्रधानमंत्री कमला प्रसाद बिसेसर और भारत के प्रधानमंत्री के बीच वायु सेवा के विस्तार के लिए हस्ताक्षर किए। दोनों के मुताबिक आयुर्वेद के प्रचार प्रसार के लिए यह कदम उठाया गया है।

इको सेन्सेटिव जोन पर खतरा

सिरोही। सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के बाद वन व पर्यावरण मंत्रालय की ओर से इको सेन्सेटिव जोन घोषित होने पर माउण्ट आबू में निर्माण गतिविधियों के चलते चट्टानों की बलि दी जा रही है। चिन्ता की बात यह है कि निर्माण की अनुमति देने वाली वही निगरानी समिति है जिसे पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचने देने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

गरीबों की कार नहीं रहेगी नेनो - टाटा

टाटा ग्रुप के चेयरमेन रतन टाटा ने लखटकिया कार नैनों की मार्केटिंग व वितरण में हुई गलतियाँ मान ली हैं। टाटा ने कहा कि आगे बढ़ने पर हम इस प्रोडक्ट का नया अवतार देखेंगे। आने वाली दिक्कतों को दूर करेंगे और यह कार पहले से कहीं ज्यादा बेहतरीन होगी।

डाक्टरों ने निकाला युवक के पैर से 90 किलो का ट्यूमर

डाक्टरों ने वियतनाम के रहने वाले एक व्यक्ति का ऑपरेशन कर नब्बे किलो का ट्यूमर निकाला है। इस व्यक्ति का नाम बुएन डाय हॉय है। ३१ साल पहले बुएन के दाये पैर में नब्बे किलो का यह ट्यूमर था। डाक्टरों ने लगातार बारह घंटे तक ऑपरेशन कर इस ट्यूमर को निकाला। बूएन इस ट्यूमर के कारण न तो चल सकते थे न ही बिस्तर पर सीधे लेट सकते थे।

आचार्य स्वदेश जी गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के कुलपति बने

कभी समय था कि गुरुकुल वृन्दावन भारत वर्ष में अपनी पृथक् पहचान रखता था। आर्य समाज के बड़े-बड़े विद्वान् यहाँ के सुयोग्य स्नातक थे। कालान्तर में अधिकारियों की आपाधापी का शिकार बन असामाजिक तत्वों का विहार स्थल बन चुका था। ऐसे कठिन समय में धुन के धनी, ब्राह्म तेज के साथ क्षात्रतेज से ऊर्जस्वित, तपोमूर्ति आचार्य स्वदेश जी ने पुनः इस संस्थान को प्राचीन स्थान पर पहुँचाने का संकल्प लिया है। कुलपति के रूप में वे इस कार्य में सक्षम हैं, इस बात में कोई संदेह नहीं है। आचार्य जी को अनेकशः बधाई।

किंवदन्तियों का रहस्य

(गतांक से आगे)

लेखक - उपेन्द्र राय

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतं एको देवो देवकीपुत्र एव। मन्त्रोप्येक स्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

(देवकी पुत्र का गीत श्रीमद्भागवत पुराण ही एकमात्र शास्त्र है, देव भी एकमात्र देवकीपुत्र ही सर्वोपरि हैं, उनके नाम ही परम मन्त्र हैं और उनकी सेवा ही एकमात्र करणीय है।)

वल्लभाचार्य ने स्वयं 'तत्वार्थदीपनिबन्ध' की 'प्रकाश' टीका रची थी। उसमें उन्होंने लिखा है कि विवाद के निपटारे के लिए यह श्लोक पुरी में जगन्नाथ ने कहा था, इस कहानी को परम्परा से जानना चाहिए-

आख्यायिका पारम्पर्यादिवावगन्तव्या-इससे स्पष्ट है कि इस तरह की एक कहानी वल्लभाचार्य के समय से बहुत पहले से चली आ रही थी और उसी का उन्होंने उल्लेख किया था। परन्तु भक्तों को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उन्होंने प्रचार किया कि स्वयं वल्लभाचार्य के जीवनकाल में मायावादियों से भक्तिमार्गी वल्लभाचार्य का विवाद हुआ। उस समय पुजारी श्री कृष्ण गुच्छिकार ने कागज, कलम, स्याही रख कर जगन्नाथ मंदिर को बन्द कर दिया था और जब उसके किवाड़ खुले तो यह श्लोक लिखा पाया गया। यह घटना १५४५ की बतायी जाती है, जब १० वर्ष की उम्र में वल्लभाचार्य जी पुरी गये थे। इस घटना को उनके जीवनकाल से जोड़ने वाला एक पत्र भी सन् १६३४ में कांकरोली के गोस्वामी व्रजभूषण लालजी महाराज को दंध गुच्छिकार श्रीकृष्ण रघुनाथ दामोदर ने दिया था। पंडित कंठमणि शास्त्री और डॉ.हरिहरनाथ टंडन ने तत्वदीपनिबन्ध और उसकी प्रकाश टीका को पढ़ने का कष्ट नहीं उठाया। अतः वे इसे वल्लभाचार्य के जीवनकाल की घटना बताते हैं किन्तु पुष्टिमार्ग के मूर्धन्य विद्वान् के.का.शास्त्री ने ऐसा मानने से असम्मति जताई है (कण्ठमणि शास्त्री,कांकरोली का इतिहास,सं १९९६,पृ.२६,हरिहरनाथ टंडन,वार्तासाहित्य अलीगढ़,१९६० ई.पृ. १४४-१४५; का.शास्त्री श्री वल्लभाचार्य महाप्रभुजी, अहमदाबाद,सन्१९५५ पृ.७५)। स्पष्ट है कि इतिहास आचार्य की बात को प्रामाणिक मानेगा,अति उत्साही भक्तों की बात को नहीं।

ग्रन्थों की महिमा बढ़ाने के लिए भी किंवदन्तियों का जन्म होता है। छापाखाना जिस युग में नहीं था,उस युग में इसकी बड़ी आवश्यकता थी। किसी ग्रन्थ की एक प्रति कराने में पर्याप्त समय लगता था। प्रतिलिपि कराने वाले को लिपिकार के निर्वाह की पूरी व्यवस्था करनी पड़ती थी और उसे पारिश्रमिक भी देना पड़ता था। इसके लिए प्रेरित करने के लिए ही विभिन्न धर्मग्रन्थों के अन्त में पढ़ने, सुनने, प्रतिलिपि कराने या ग्रन्थदान करने से होने वाले पुण्य का वर्णन मिलता है। इसी उद्देश्य से वाल्मीकि रामायण-महात्य,श्रीमद्भागवत महात्य आदि भी रचे गये। पुण्यलाभ के लिए जिस ग्रन्थ की जितनी अधिक प्रतिलिपियाँ करायी जातीं; वह ग्रन्थ उतना ही बहुप्रचारित और सुरक्षित हो जाता था। संस्कृत के नाट्यकार भास के बारे में प्रसिद्धि है कि उनके नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' को परीक्षा के लिए आग में डाला गया किन्तु वह जला नहीं। रामचरितमानस के बारे में प्रसिद्ध है कि उसको सबसे नीचे रखकर ऊपर अन्य धर्मग्रन्थों को स्थापित कर काशी के विश्वनाथ मंदिर के पल्ले बन्द कर दिये गये थे। जब मंदिर खोला गया तो रामचरितमानस वेदादि सभी ग्रन्थों के ऊपर रखा मिला। इसी तरह जेब में 'हनुमानचालीसा' रखने से, उसका पाठ करने से भूत-प्रेत आदि दूर रहते हैं यह तो प्रसिद्ध है ही। सन् १९६० के दशक में चीन ने हनुमान चालीसा की जगह माओ की 'लाल किताब' को रखा था। सुना गया कि लाल किताब को पढ़ने से किसान को खेती में अच्छी फसल मिलती है,श्रमिक पढ़े तो कारखानों में उत्पादन अच्छा होता है,डाक्टर और इंजीनियर पढ़ें तो अपने अपने पेशे में वे दक्षता पाते हैं। उन दिनों भारत में बहुत से नवयुवकों की जेब में वह 'लाल किताब' रहती थी। तात्पर्य यह कि छापाखाना चालू होने के बाद भी भक्ति भाव बना हुआ है। यह बात दूसरी है कि कभी-कभी पुराने उपास्य की जगह नए ले लेते हैं।

चमत्कार-प्रियता मानव मन की एक बड़ी दुर्बलता है। इसीलिए शून्य से हाथ बढ़ाकर घड़ी या मिठाई ला देने वाले बाबाजी की शिष्य मण्डली में कोटिपतियों की भरमार है। पाँच-छः मास की 'निर्विकल्प समाधि' लगाने वाले महात्मा के पास इसीलिए लोगों को दौड़ते देखा गया है। प्रह्लाद को मार डालने के लिए जैसी चेष्टाएँ हिरण्यकश्यपु ने की थीं,प्रायः वैसी ही सिकन्दर लोदी कबीर को मारने के लिए करता है और प्रह्लाद की भाँति कबीर भी बच जाते हैं। मीरा को मारने के लिए भेजा गया विष अमृत बन जाता है,पिटारी में भेजा गया विषधर साँप 'नौसरहार'(या शालीग्राम) बन जाता है और विष से बुझे शूलों की सेज भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाती। देव-विग्रह में कर्पूर या स्पिरिट की तरह समा जाने की कथा तो कई भक्तों के बारे में प्रचलित है। किसी देवता,मुनि या ऋषि के दर्शन अथवा स्पर्श मात्र से अथवा किसी के दिये फल या पान को खाने से किसी नारी का गर्भधारण भी चमत्कार ही है। कुमारी अवस्था में कुन्ती ने दुर्वासा के दिये वर से सूर्य को बुलाया और सूर्य का दर्शन विफल होने वाला नहीं था, अतः वे गर्भवती हुईं और उन्होंने कर्ण को जन्म दिया,इस कथा को हम कब से सुनते आये हैं। पुराणों को देखा तो पता चला कि कर्ण अनु के वंशज अंगराज जनमेजय का पुत्र था। लगता है कुन्ती के विवाह-विच्छेद की बात को छिपाने के लिए दुर्वासा के श्राप और सूर्य से कर्ण की उत्पत्ति का प्रचार किया गया । बाद का समाज द्रौपदी के पाँच पति होने की बात तो हजम कर सकता था पर पुनर्विवाह की बात बड़ी गुरुपाक लगती। 'चैतन्य भागवत' के रचयिता वृन्दावनदास के बारे में किंवदन्ती है कि उनकी माता विधवा थी पर चैतन्यदेव का ताम्बूल प्रसाद रूप में ग्रहण करके गर्भवती हो गयीं। उसी गर्भ से वृन्दावनदास का जन्म हुआ। इसमें सत्य कितना है,इसकी छानबीन करने का मौका मुझे अभी तक नहीं मिला।

व्यक्ति या स्थान के नाम की व्याख्या के लिए भी किंवदन्तियों का जन्म होता है। इतिहास-लेखन के लिए प्रायः संस्कृत ग्रन्थों की अपेक्षा बौद्ध और जैन ग्रन्थों पर अधिक भरोसा किया जाता है। परन्तु ये ग्रन्थ भी किंवदन्तियों से भरे पड़े हैं। बौद्ध साहित्य के विद्वान् बी.एम.बरुआ पालि ग्रन्थों में प्राप्त काल्पनिक व्याख्याओं पर बिन्दुमात्र विश्वास नहीं करते। उदाहरणार्थ 'महावंस' टीका में कहा गया कि चन्द्र नामक बैल ने रक्षा की,अतः चन्द्रगुप्त नाम हुआ और शरीर पर बकरियों के रक्त की बूँदें बहने से बिन्दुसार नाम पड़ा। बुद्धघोष कृत 'खुद्दक' पाठ की हट्ठकथा (टीका) में बताया गया कि वाराणसी की एक रानी की कोख से परस्पर जुड़े दो मांस -पिण्डों का जन्म हुआ था। उसने उन्हें गंगा में बहा दिया पर एक तपस्वी ने उनका उद्धार कर लिया,अतः उसका नाम लिच्छवि (चमड़ी रहित) या लीन छवि(जुड़ी हुई चमड़ी) हुआ। उसे गड़रियों को पालने के लिए तपस्वी ने दिया पर दुर्व्यवहार के कारण वर्जित होने से बज्जी नाम पड़ा। मौर्य नाम की व्याख्या बौद्ध ग्रन्थ दो प्रकार की देते हैं-(१) मयूर बहुल प्रदेश में निवास के कारण मोरिय कहलाये।(२) उनका नगर मयूर की गर्दन की भाँति नीले पत्थरों से निर्मित होने से मोरिय नाम पड़ा। इससे स्पष्ट है कि उन ग्रन्थकारों को लिच्छवि,बज्जी या मौर्य नामों के बारे में कुछ भी

किंवदंतियाँ भारत से बाहर भी

जानकारी नहीं थी और निरंकुश कल्पना पर टिकी बातों को ही उन्होंने ग्रहण कर लिया ।आजकल भी ऐसी प्रवृत्ति देखी जाती है। एक रामपरीक्षा नाम के सज्जन के बारे में सुनने में आया कि उन्होंने रामनगर में परीक्षा दी अतः ऐसा नाम पड़ा। फिर दशरथ के दश रथ और दशानन के दश मुख क्यों न हों?

ऊपर बौद्ध साहित्य से जो विचित्र व्याख्याएँ दी गयी हैं,उनका आशय यह न समझा जाय कि अन्यत्र ऐसी व्याख्याएँ नहीं हैं। कथासरित्सागर भी कुछ पीछे नहीं। उसमें कथापीठ लम्बक की तृतीय तरंग में पाटलीपुत्र नगर की स्थापना का वर्णन है। पुत्रक नाम का कोई ब्राह्मण था। उसने किसी समय मयासुर के दो बेटों को झगड़ा करते देखा। विवाद का विषय यह था कि तीन मूल्यवान वस्तुएँ कौन लेगा। उन तीन चीजों में से एक तो पादुका थी जिसे पहन कर आकाश में स्वच्छन्दता से जाना संभव था। दूसरी यष्टि(छड़ी) थीं, उससे जो लिखा जाता वह सचमुच तैयार हो जाता । तीसरी वस्तु एक भाजन (बर्तन) था जिससे इच्छानुसार आहार मिल सकता था। मयासुर के दोनों बेटों के झगड़े में पुत्रक मध्यस्थ बना। उसने कहा कि तुम दोनों

में से जो दौड़ में जीत जाय वही तीनों चीजें ले ले। इस पर जब वे दोनों दौड़ने लगे तो पुत्रक ने पादुका पहन ली और यष्टि तथा भाजन लेकर उड़ गया। आकाशमार्ग से जाते-जाते राजा महेन्द्र वर्मा की राजधानी में पहुँचा। राजकन्या पाटली से गुप्त रूप से मिलन हुआ और अन्त में वह उसे लेकर उड़ गया। उड़ते-उड़ते वह जिस जगह पहुँच कर उतरा वहीं यष्टि की सहायता से उसने नगर का निर्माण किया। वही नगर पाटलीपुत्र कहलाया। दूसरे स्थान पर कहा गया है कि शालित नामक सिंह पर सवारी करने वाले पुरुष का नाम शालिवाहन हुआ।

मानव-मन की एक और प्रवृत्ति अज्ञात को ज्ञात बनाने की है। यह प्रवृत्ति लोगों की प्रकृति के भेद से दो रूपों में प्रकट होती है। तर्कप्रधान व्यक्ति छानबीन का रास्ता पकड़ते हैं जबकि कल्पनाशील व्यक्ति कल्पना से अपनी सूझ-बूझ के अनुसार उसका निर्माण कर लेते हैं। ईसा के ५७ वर्ष पूर्व की एक कालगणना बहुत दिनों से चली आ रही थी। उसका जन्म कब कैसे हुआ यह लोग भूल चुके थे। इसीलिए ईसवी पूर्व प्रथम शताब्दी के एक शकारि विक्रमादित्य की कल्पना की गई और उसके बारे में अनेक कथाओं का प्रचार हुआ। दूसरी कालगणना विन्ध्य के दक्षिण में प्रचलित थी जो सन ७८ से शुरू होती थी जिसके लिए शालिवाहन की कथाओं का जन्म हुआ। पुराने मन्दिर,किले,टीले,गुहाएँ और वृक्ष नाना प्रकार की किंवदन्तियों का जन्म देते हैं। समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो यह मानने को कभी तैयार नहीं कि मैं अमुक विषय में अज्ञ हूँ। गाँव में ऐसे अनपढ़ बूढ़े मिले हैं जिन्होंने बताया कि हसन और हुसेन को युद्ध में पराजित करके मार डालने वाले तोरसिंह नाम के एक क्षत्रिय राजा थे। फैजाबाद में जिन दिनों मैं कॉलेज में पढ़ता था,उन दिनों मैंने अनुभव किया कि मेरे बारे में मुझसे अधिक जानने वाले भी कई लोग वहाँ विराजमान थे। मेरे बारे में वे जो कहानियाँ पास पड़ोसवालों को सुनाते थे, सभी बेसिर पैर की थीं। मेरे वर्तमान वासस्थान के आसपास भी दो-चार ऐसे जानकार मिल जायेंगे जिन्होंने घर बैठे सब कुछ जान लिया है।

किंवदन्तियों का एक अंश कविता के प्रसंग-निर्देश से सम्बन्धित होता है। विशेष घटनाएँ, विशेष अवसर कवि को प्रेरित करते हैं, इसमें सन्देह नहीं। वाल्मीकि के 'मा निषाद'श्लोक की कथा सुविदित है। भारत में प्राचीन काल में समस्यापूर्तियों का प्रचार था। राजसभाओं या अपनी सूझ बूझ के अनुसार उसकी पूर्ति करते। कल्पना से किंवदन्तियों में प्रसंग तैयार भी किये गये हैं। यथा,कुछ छन्द प्रश्नोत्तर रूप में होते हैं। उनके पूर्वार्द्ध को एक की और उत्तरार्द्ध को दूसरे की कृति बता देना सहज होता है। यथा कालिदास के निम्न श्लोक के बारे में प्रसिद्ध है कि पूर्वार्द्ध लंका के राजा की दी हुई समस्या थी,उत्तरार्द्ध कालिदास द्वारा उसकी पूर्ति-

कमले कमलोत्पत्तिः श्रूयते न च दृश्यते।
बाले तव मुखाम्भोज कथमिन्हीहरद्वयम्।।

कमल से कमल की उत्पत्ति सुनी जाती है पर दिखाई नहीं देती। हे सुन्दरी! तुम्हारे मुख-कमल में फिर दो इन्दिवर कैसे? इनमें इतिहास ढूंढ़ना व्यर्थ है। कभी कभी किंवदन्तियों का जन्म छन्द का आशय न समझने से होता है। कुम्भनदास का सीकरी विषयक छन्द इसका उदाहरण है। कुम्भनदास उन लोगों को हास्यास्पद समझते थे जो बादशाह अकबर से मिलने सीकरी की ओर अकारण दौड़ रहे थे। यह दौड़ भक्तिमार्ग में बाधक थी। उनकी बात उनके सम्प्रदाय के वैष्णवों की समझ में नहीं आयी अतः उन लोगों ने बूढ़े कुम्भनदास के सीकरी आने -जाने की कथा गढ़ डाली। उन्होंने यह सोचने का कष्ट नहीं उठाया कि एक निर्लोभ वैष्णव का किसी बादशाह से क्या लेना-देना? इसी तरह का वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य के लिए शाही पदवी,शाही खिलत धारण करना बड़े सम्मान की बात नहीं। फिर भी यह किंवदन्ती चल पड़ी कि विट्ठलनाथ जी को गुसाई बनाया,न्यायाधीश की पोशाक दी बादशाह अकबर ने। आश्चर्य यह है कि डॉ.प्रभुदयाल मीतल जैसे विद्वान् भी इसे ऐतिहासिक सच्चाई मानते हैं।

उलटे सीधे प्रसंग-निर्देशों के सिलसिले में कुछ बातें याद आयीं। फैजाबाद में एक हंसोड़ सज्जन का कहना था कि 'कवितावली' की पंक्ति 'बलि जाउं लला इन बोलन की' राम के लिए नहीं,किसी 'ललाइन' अर्थात् कायस्थ रमणी के लिए रची गई है। इसी प्रकार अयोध्या में संस्कृत के एक विद्यार्थी ने बताया कि गोस्वामी तुलसीदास उदासी सम्प्रदाय के साधुओं से परिचित थे और विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी 'मुनि बिनु नारि दुखारे' उन्हीं के लिए रचा गया है। रामचरितमानस की पंक्ति 'तात लात रावन मोंहि मारा' की एक रोचक व्याख्या भी स्मरणीय है। तदनुसार जाड़े के दिन थे,ठंडक दूर करने के लिए रावण आग के सामने बैठा हाथ-पैर सेंक रहा था। उसी हालत में उसने गरम गरम लात विभीषण के मारी। अस्तु,कविता के सही भाव और पूर्वापर सम्बन्ध विचार करके ही किंवदन्तियों के कम से कम एक अंश की निःसारता समझी जा सकती है।

अचिन्त्य भवन बाबूपाड़ा(पार्क के निकट)
अलीपुरदुआर-736121 (पश्चिम बंगाल)

स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर

वीर सावरकर जिन्होंने अपने जीवन के एक एक क्षण को राष्ट्र देवी की आराधना में समर्पित कर दिया। उनका तैल चित्र २६ फरवरी २००३ को भारतीय संसद के केन्द्रीय कक्ष में लगाया गया तब कतिपय तथाकथित धर्मनिरपेक्षता का लबादा ओढ़े नेताओं ने चित्र के अनावरण समारोह का बहिष्कार कर पूरे देश को क्षुब्ध कर दिया। ऐसे वीरों का बलिदान वस्तुतः किसी समुदाय या पार्टी तक सीमित नहीं रहता। वे राष्ट्र नायक होते हैं उनके बलिदान को सीमित करना उनके साथ अन्याय है और अक्षम्य अपराध है। प्रस्तुत है, श्री विनीत चौहान,अलवर (राज.) की कविता के कुछ अंश :-

कब तक दांतों को पीसेंगे,कब तक मुट्ठी भीचेंगे,
कब तक आँखों के पानी से,हम पीड़ा को सीचेंगे।
रोज यहाँ गाली मिलती है,देशभक्त परवानों को,
आजादी के योद्धाओं को,भारत के दीवानों को।।
जिनके ओछे कद हैं,वो ही अम्बर के मेहमान बने,
जो अंधियारों के चारण थे,सूरज के प्रतिमान बने।
उन लोगों ने भारत का,बलिदानी पन्ना फूँक दिया,
सावरकर के रिसते घावों,पर ही भाला भौंक दिया।।
जिसने तेरह वर्ष खपाये, अपने काले पानी पर,
सारे तीर्थ न्यौछावर, उसकी पावन कुर्बानी पर।
जो सूरज की प्रथम किरण पर कोल्हू में जुत जाते थे,
वो आजादी के सूरज को,अपना रक्त चढ़ाते थे।।
लेकिन जिस दिन ये बेहूदी, घटना यहाँ घटी होगी,
उस दिन स्वर्गलोक में उनकी, रातें नहीं कटी होंगी।
सेल्युलर की काल कोठरी सहसा जाग गई होगी,
सागर की बर्फीली लहरें भीषण आग हुई होंगी।।
काल कोठरी वाली लौह, सलाखें गर्माई होंगी,
फाँसी के तख्ते पर लटकी,रस्सी चिल्लाई होगी।
सावरकर की आँखों से तब, खारा जल छलका होगा,
कोल्हू से उस समय तेल की जगह लहू टपका होगा।।
कायर राजनीति ने लेकिन, वो लहू भी चाट लिया,
वोटों की खातिर संसद ने,युगपुरुषों को बाँट लिया।
हमने केवल कुछ पुतलों को, चौराहों पर खड़ा किया,
और कुछ लोगों को केवल,तस्वीरों में जड़ा दिया।।
हमने मोल नहीं पहचाना, राजगुरु की फाँसी का,
हमने ऋण नहीं चुकाया,अब तक रानी झाँसी का।
बिस्मिल जी की बहन मर गई, जूठे कप धोते-धोते,
और यहाँ दुर्गा भाभी ने,दिन काटे रोते-रोते।।
अब भी समय नहीं बीता है, भूलों पर पछताने का,
भारत माता के मंदिर में, अपने शीश झुकाने का।
उस दिन बलिदानी चरणों पर, अपने ताज धरोगे तुम,
उस दिन सौ करोड़ लोगों के,दिल पर राज करोगे तुम।।
वरना वो दिन दूर नहीं, मौसम फागी हो जाएगा,
किसी दीवाने देशभक्त का,दिल बागी हो जाएगा।
अपने हाथों में पिस्टल ले, वो सड़कों पर आएगा,
और किसी कायर सीने को,वो छलनी कर जाएगा।।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) **अवश्य खरीदें।**

प्राप्ति स्थल : श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सन्देश' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सन्देश के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

इन दुकानों का क्या करें-

सन् २००४ में एक प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार में रिपोर्टर अनुभा साहनी की एक स्टिंग आपरेशननुमा रिपोर्ट छपी थी। शीर्षक था (janet weds justin----in jamuna bazar.) आर्य समाज द्वारा जो विवाह प्रमाण पत्र दिए जा रहे थे उनकी वास्तविकता जानने के लिए उक्त रिपोर्टर ने स्वयं को वधु बताते हुए जो प्रयास किये उसका परिणाम था (उन्हीं के शब्दो में) (Four hours and Rs. 4000/- is all it takes to change your name and get married to a non existent groom in Delhi) अर्थात् वर के न होते हुए भी मात्र चार घण्टे और ४०००/- रु. में आप वैधानिक रूप में नाम परिवर्तन भी कर सकते हैं व विवाह प्रमाण पत्र भी प्राप्त कर सकते हैं।

संक्षेप में कहानी यह थी कि उक्त महिला रिपोर्टर ने दिल्ली की तीस हजारी कोर्ट के आस-पास बैठने वाले ऐजेन्टों के जरिये मजिस्ट्रेट महोदय का हस्ताक्षरशुदा प्रमाण पत्र जिसमें उनका नाम जेनेट जैक्सन (परिवर्तित) था मात्र ३५ मिनिट व २५० रु. में प्राप्त कर लिया। पुनः ऐजेन्ट्स के माध्यम से ही औपचारिकताएँ पूरी करते हुए दूल्हे का काल्पनिक नाम जस्टिन शर्मा भर, ऐजेन्ट में से ही एक का फोटो दूल्हे के स्थान पर चिपका ४०००/- रु. में विवाह प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया। न दूल्हा, न विवाह, न फेरे, न सप्तपदी। अब वह श्रीमती जेनेट जैक्सन शर्मा पत्नी जस्टिन शर्मा बन चुकी थी। विवाह प्रमाण पत्र पर

अगर आपकी बिटिया होती तो ?

आर्य समाज और विवाह

- अशोक आर्य

'आर्य समाज मंदिर (रजि.)' २१६४ जमुना बाजार, दादा दरबार के पास, दिल्ली-११०००६ फोन- ५६०१२४६६ अंग्रेजी में छपा था। संदर्भ क्रमांक- १३८/१०४ दिनांक- ११.०२.२००४, हस्ताक्षर-पंडित धनंजय द्विवेदी (पुरोहित) के हैं। (जिन्होंने २०० रु. पृथक् से लिए) तथा गवाह कोई रामगोपाल तथा एक अन्य हैं जिनका नाम दृग्गत् नहीं हो पा रहा। यह सब जब हमने पढ़ा तो स्तब्ध रह गये। अखबार की कतरन तभी सँभाल कर रखली कि इस संदर्भ में लिखूँगा। पर व्यस्तताओं के कारण संभव न हो सका।

अब जब मान्य राजस्थान उच्च न्यायालय का निर्णय समक्ष आया तो स्मृति पटल पर यह सब सखेद ताजा हो गया। ये दुकानें विषबेल की तरह और भी फैल गयी हैं। ४००० हजार की राशि २५०००/- से एक लाख की हो गयी है। और प्यारा आर्यसमाज समाज के समक्ष नजरें नीचे किए है।

राजस्थान हाइकोर्ट के एक निर्णय के पश्चात् हमे आत्मावलोकन का अवसर मिला है कि आर्य समाज में जो विवाह करवाये जा रहे हैं, उनके द्वारा आज आम समाज में, बुद्धिजीवी वर्ग में, आर्य समाज के प्रति क्या धारणा बन रही है। यह ध्रुव सत्य है कि कभी अन्तर्जातीय तथा अन्तर्धार्मिक विवाह कराने का एक मात्र, साधन 'आर्य मैरीज वेलिडेशन अधिनियम १९३७' के अन्तर्गत आर्य समाज को प्रदत यह अधिकार था, जो कि आर्यसमाज तथा महर्षिवर द्वारा निर्देशित प्रशस्त समाज निर्माण हेतु अत्यन्त आवश्यक था।

यह भी विचारणीय है कि जब केवल आर्य समाज को यह अधिकार प्राप्त था तब आर्य समाजों ने कर्तव्य रूप में नाना प्रकार से कष्टों को सहन करते हुए उसे सम्पादित किया तथा व्यवसाय नहीं बनाया। आज जबकि उक्त प्रकार के विवाहों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है, कुछ तथाकथित आर्य समाजें उसे व्यवसाय के रूप में देखती हैं। हमारे स्वयं के समक्ष ऐसे कई शर्मिन्दगी के क्षण आए, जब समाज के प्रतिष्ठित लोगों ने ऐसा करने से हुई हानि को लेकर हमें उपालम्भ दिया।

अभी कोई दो वर्ष पूर्व की ही बात है, नगर के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित महोदय, जो राजनिति में भी उच्च स्थान रखते हैं तथा हमसे मित्रभाव भी है, ने हमें अचानक फोन करके पूछा की अमुक बच्ची ने किसी अमुक के साथ किसी आर्य समाज में विवाह कर लिया है, तथा कुछ दिन घूमने फिरने के पश्चात् लड़के ने बच्ची को छोड़ दिया है। प्रतिष्ठित परिवार की बिटिया है। वह लड़की शहर इन्दौर बता रही है, पर आर्य समाज का नाम अथवा लोकेशन नहीं बता पा रही है। अब अगर आर्य समाज से विवाह प्रमाण पत्र मिल जावे (जो उन्होंने तत्समय नहीं दिया) तो लड़के को विवश कर सकते हैं। हमने पूज्य स्वामी वैदिकानन्द जी, से जानकारी चाही, पर ज्ञात न हो सकी। सम्भवतः यह कोई फर्जी आर्य समाज थी जैसी की जयपुर की थी। हमारे उस मित्र ने जो कुछ उस प्रसंग में कहा, सब तो क्या लिखें पर हमारी गर्दन शर्म से झुक गयी, क्योंकि उनके अन्तिम शब्द थे- 'अगर आपकी बिटिया होती तो'?

आज लगभग सर्वत्र यह स्थिति है। लोग आर्यसमाज को विवाह कराने की संस्था के रूप में जानते हैं, ऐसा अनेकत्र देखा गया है। वस्तुतः समाज के बदलते परिवेश के प्रभाव में तथाकथित प्रेम (वासना) में लिप्त युगल घर से भागकर आर्यसमाजों की शरण लेते हैं। ऐसा नही है कि ऐसे समय में अन्तर्जातीय होना ही माता-पिता की असहमति का कारण होता है। (यह गाँठ तो काफी ढीली पड़ गयी है) रूप, आयु, बल कुल की असमानता भी इसमें कारक होती है। पर हम इन चीजों पर विचार नहीं करते। हमारा तर्क होता है कि महर्षि ने 'विवाह लड़का-लड़की के अधीन हो' ऐसा लिखा है। अतः माँ-बाप की असहमति तो होगी ही। यहाँ तक कि यह भी कह दिया जाता है कि माँ-बाप सहमत होंगे तो ये हमारे यहाँ आऐंगे ही क्यों?

यहाँ यह भी जान लें कि तत्समय लागू हिन्दू विवाह अधिनियम में अन्तर्जातीय तथा अन्तर्धार्मिक विवाह मान्य नही थे। अतः आर्यसमाज का यह अधिकार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। पर आज ऐसी स्थिति नहीं है। अतः इस आलेख के माध्यम से, ऋषिवर ने विवाह के सम्बन्ध में अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में क्या व्यवस्थाएँ दी हैं उन्हें एक साथ प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि इस गम्भीर विषय पर समग्रता से विचारकर सुधी आर्यजन, अधिकारी जन इस प्रकार का उपाय निकाल सकें, जिसका परिणाम आर्यों के निकट शर्मिन्दगी न हो। ऐसा नहीं है कि हर बार परिणाम गलत ही हों, सुखद भी निकलते हैं।

आर्यसमाज भीमगन्जमण्डी, कोटा से सम्बद्धता के दौरान की दो घटनाएँ आज भी मेरे स्मृति-पटल पर अंकित हैं। अति संक्षेप में प्रस्तुत हैं।

१. एक सांय सभी औपचारिकताओं के पूरे होने के पश्चात् आर्यसमाज में विवाह सम्पन्न कराया। प्रातः लगभग २० वर्ष की एक लड़की हमारे घर रोती हुयी आयी और आरोप लगाया कि हमारे कारण उसका जीवन बर्बाद हो गया। पता लगा कि पहले दिन जो विवाह सम्पन्न कराया था वह लड़का इस लड़की का पति था। यहाँ सारे शपथपत्र, सम्मानित व्यक्तियों के हस्ताक्षर, कुछ भी इस गलती को नहीं रोक सके। ये औपचारिकताएँ भी निःसार साबित हुयीं। इसका बोझ आज भी हमारे ऊपर है।

२. एक जोगी परिवार की कन्या का विवाह सम्पन्न कुलीन लड़के से कराया। यहाँ कन्या का पिता ही हमसे विरोध कर रहा था। हमने उसे समझाया। विवाह हुआ। हमारे कोटा छोड़ने तक कन्या अपने ससुराल में आनन्द पूर्वक रह रही थी। कन्या का पिता हमें धन्यवाद देने भी आया।

तो दोनों प्रकार के अनुभव होते हैं। पर स्वच्छन्दता को बढ़ावा देने वाले, माता-पिता को जिन्दगी भर का दुःख देने वाले विवाह को महर्षि प्रोत्साहित करते हैं, ऐसा हमें नहीं लगता।

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास व स्वमन्तव्यामन्तव्य में महर्षि विवाह के संदर्भ में क्या लिखते हैं, विचारार्थ प्रस्तुत है।

१. उत्तम कुल के लड़के और लड़कियों का आपस में विवाह होना चाहिये।

२. बाल्यावस्था में विवाह कदापि न होना चाहिये। (वर्तमान में देश के कानून के अनुसार निर्धारित-न्यूनतम आयु कन्या व

पुरुष की हो, यह सुनिश्चित कर लें। नाबालिगों का विवाह कराना कानूनन अपराध है)

३. ब्रह्मचर्य व विद्या-रहितों का विवाह न होना चाहिये।

४. बेमेल विवाह कदापि न होने चाहिये। गुण-कर्म-स्वभाव का मेल अत्यन्त आवश्यक है। अगर इनमें मेल न हो तो भले ही लड़का-लड़की जन्मभर कुँवारे रहें, विवाह न करें।

५. विवाह में निम्न गुणों में मेल का विशेष ध्यान दें। (अ) विद्या (ब) विनय (स) शील (द) रूप (य) आयु (र) बल (ल) कुल (व) शरीर का परिमाण।

६. विवाह लड़का व लड़की के आधीन होना चाहिये। माता-पिता कभी करना विचारें तो भी उसमें लड़का-लड़की की प्रसन्नता हो।

७. जैसी स्वयंवर की रीति आर्यावर्त्त में परम्परा से चली आती है वही उत्तम है।

८. विवाह वर्णानुक्रम से करें और यह वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार हो।

९. गुण कर्मों से वर्णों की व्यवस्था कन्याओं की सोलहवें वर्ष और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष की परीक्षा में नियत करनी चाहिये। (जिस प्रकार प्रत्येक शिक्षार्थी को अकादमिक शिक्षा का प्रमाण-पत्र मिलता है, उसी प्रकार गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर परीक्षोपरान्त वर्ण का प्रमाण-पत्र भी दिया जाना चाहिये।)

विवाह के लिये प्रक्रिया

१. विवाह के पूर्व कन्या और वर का एकान्त में मेल न होना चाहिये।

२. जब कन्या व वर के विवाह का समय हो तब उन कन्या और कुमारों का प्रतिविम्ब अर्थात् जिसको फोटोग्राफ कहते हैं अथवा प्रतिकृति उतार के कन्याओं की अध्यापिकाओं के पास कुमारों की, कुमारों के अध्यापकों के पास कन्याओं की प्रतिकृति भेज दें।

३. जिस-जिस का रूप मिल जाय उसका जन्म-चरित्र कन्या व वर के हाथ में दे, अध्यापक उनकी सम्मति जान लें।

४. कन्या तथा वर का एक दूसरे के समक्ष उपस्थित होने का प्रबन्ध हो। अध्यापकों अथवा माता-पितादि भद्रजनों के समक्ष बातचीत हो।

५. अगर लड़का-लड़की को कुछ गुप्त बातें पूछनी हों तो लिखकर पूछ लें।

६. विवाह के समय अनेक विद्वान् पुरुष और स्त्रियों का सत्कार करें।

७. जैसे प्रसिद्धि से विवाह वैसे ही प्रसिद्धि से नियोग.....। (अर्थात् विवाह गुप चुप नहीं प्रसिद्धि से होना चाहिये)

८. विवाह- जो नियमपूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रहण करना, वह विवाह कहलाता है। (स्वमन्तव्यामन्तव्य) ये सारे ऋषि-निर्देश विवाह के संबध में हमें 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलते हैं।

विद्वज्जन गम्भीरता पूर्वक विचार करें। हमें तो यही लगता है कि गुपचुप विवाह कराना ऋषि अभिप्राय के विरुद्ध है तथा आर्यो को उचित नहीं। यहाँ यह भी उल्लिखित कर देना समीचीन होगा कि इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रख सार्वदेशिक आर्य

प्रतिनिधि सभा ने भी १९९३ में गम्भीरता-पूर्वक विचार किया था तथा निम्नलिखित दिशा निर्देश दिए थे। इन्हीं का उल्लेख माननीय उच्च न्यायालय राजस्थान के निर्णय में किया गया है। उन्हें उपयोगी जान यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

(आर्य समाजों में विवाह के प्रस्तावित नियम)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक २८ फरवरी, १९९३ में आर्य समाजों में कराए जा रहे विवाहों का विषय प्रस्तुत हुआ था। इस विषय पर कई सदस्यों ने अपनी-अपनी राय प्रस्तुत की और यह निर्णय हुआ कि समस्त आर्यसमाजों में विवाह संस्कारों के लिए एक जैसे नियम लागू किए जाने चाहिए। कई आर्यसमाजों में वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध बेमेल विवाह कराए जाने के कई प्रकरणों पर भी इस बैठक में चर्चा हुई। जैसे ५० वर्ष के व्यक्ति का विवाह २२ वर्ष की कन्या से कराया जाना। अन्तरंग सदस्यों के विचार से इन नियमों का निर्धारण करने के लिए ५ सदस्यीय उपसमिति गठित की गई, जिसमें सर्वश्री महावीर सिंह, सोमनाथ मारवाह, जयनारायण अरुण तथा श्री सूर्यदेव जी सदस्य थे। इन सदस्यों से विचारोपरान्त आर्यसमाजों द्वारा वैदिक विवाह हेतु आवश्यक नियमों का एक प्रारूप तैयार किया है, जिसमें अन्तरंग बैठक में प्राप्त सुझावों को शामिल करके अन्तिम रूप से सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

नियमः-

१. वर-कन्या दोनों के पृथक्-पृथक् प्रार्थना पत्र जिन पर एक दूसरे की स्वीकृति के हस्ताक्षर होंगे।

२. दोनों प्रार्थना पत्रों पर दो संभ्रान्त व्यक्तियों, आर्यसमाज के सभासदों द्वारा संस्तुति।

३. आयु प्रमाण पत्र (हाईस्कूल की सनद) आयु सीमा कन्या १८ वर्ष, वर २१ वर्ष, अशिक्षित होने की स्थिति में सी.एम. ओ.(मुख्य चिकित्सा अधिकारी) का आयु प्रमाण पत्र।

४. शपथ पत्र (बयान-ए-हल्फी) जिसमें नाम, वल्दियत, पता, आयु, शिक्षा, वर्तमान वैवाहिक विवरण

(अविवाहित, विधुर, विधवा, तलाकशुदा आदि) मानसिक स्थिति स्वस्थ, परस्पर रिश्ता (यदि कोई है) लिपिबद्ध नातेदारी, सगोत्र न होने की आख्या, विरुद्ध कोई पुलिस रिपोर्ट या कोर्ट केस न होने की आत्म स्वीकृति, लालच, दबाव, धमकी आदि न होकर स्वेच्छा से विवाह की स्वीकारी तथा बेमेल विवाह न होने का प्रमाण हो।

५. विधर्मी की स्थिति में शुद्धि प्रमाण पत्र तथा नए नामों की घोषणा।

६. वर एवं कन्या के दो-दो फोटोग्राफ (एक-एक प्रार्थना पत्र पर तथा एक-एक समाज के रिकार्ड के लिए)।

७. तीन गवाहों के हस्ताक्षर (विवाह के साक्षी के रूप में मित्र या सम्बन्धी)।

८. नोटिस बोर्ड पर सूचना।

९. माता-पिता को ६ दिन का समय देकर सूचना तथा सहमति के लिए प्रार्थना पत्र आर्य समाज द्वारा लिखा जाए।

१०. माता-पिता की असहमति होने पर उसके कारणों पर वैदिक सिद्धान्तानुकूल निणर्य आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री अथवा विशेष नियुक्त विद्वान् द्वारा लिया जाए।

यदि असहमति जन्म-गत् जातिवाद के कारण या अमीरी गरीबी के कारण हो, परन्तु वर और कन्या की योग्यता लगभग समान हो तो उसकी परवाह किए बिना विवाह कराया जा सकता है। यदि असहमति बेमेल विवाह जैसे आयु अन्तर का बहुत अधिक होना या किसी प्रकार का चरित्र दोष आदि के कारण हो तो ऐसे विवाहों को नहीं कराया जाए।

११. समाज के पत्राचार-ऐजेण्डा, कार्यवाही पंजिका तथा प्रमाण पत्र जिस पर प्रधान, मन्त्री तथा पुरोहित के हस्ताक्षर तथा वर-कन्या के फोटो तथा हस्ताक्षर हो विधिवत् रजिस्टर के रूप में सुरक्षित रखे जाएँ।

अतएव विद्वज्जन तथा अधिकारी वर्ग इस विषय पर गम्भीर चिन्तन करें, यह निवेदन है। जन सामान्य भी विवाह हेतु आर्य

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों की समुचित व्यवस्था, सारी व्यवस्था हम करेंगे, आप केवल निम्न दुरभाष/चलभाष सम्पर्क करें।
०२९४-२४१७६९४, ०९३१४५३५३७९
कृपया न्यास की वेबासाइट : www.satyarthprakashnyas.org को अवश्व देखें ।

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
अहमदाबाद

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।

पूज्य पिता (स्मृतिशेष) श्री बंशीधर अग्रवाल, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के मिशन को समर्पित किया था व मानव कल्याण हेतु मृत्यु पश्चात् निज-देह भी आयुर्विज्ञान महाविद्यालय को समर्पित कर दी थी, उनके जीवन-व्रत का अनुव्रती बन, प्रिंटिंग के व्यवसाय में अपार सफलता प्राप्त कर, सर्वतोभावेन माँ आर्य समाज की सेवा में सन्नद्ध हैं। सद्यः आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात के प्रधान हैं। न्यास के न्यासी के रूप में आप सभी योजनाओं में अग्रणी बनकर सहयोग व मार्गदर्शन प्रदान करने में तत्पर रहते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सौम्य, स्नेहिल - व्यक्तित्व के धनी, दृष्टि स्नेह-रस से आप्लावित, सहजता व मूक भाव में भी दूसरों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देने की सामर्थ्य रखने वाले, उद्योगपति, अनेक गुरुकुल व आर्ष संस्थाओं के अर्थ-सहयोग- सम्बल, 'तेरी वस्तु तुझी को अर्पण' के मंत्र को जीवन में साकार करने वाले, न्यास के मान्य न्यासी के रूप में सतत् सहयोगी, जिनसे जुड़ने पर न्यास को गर्व की अनुभूति होती है। सत्यार्थ-सन्देश परिवार, आपके निरामय दीर्घायुष्य के लिये, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है।

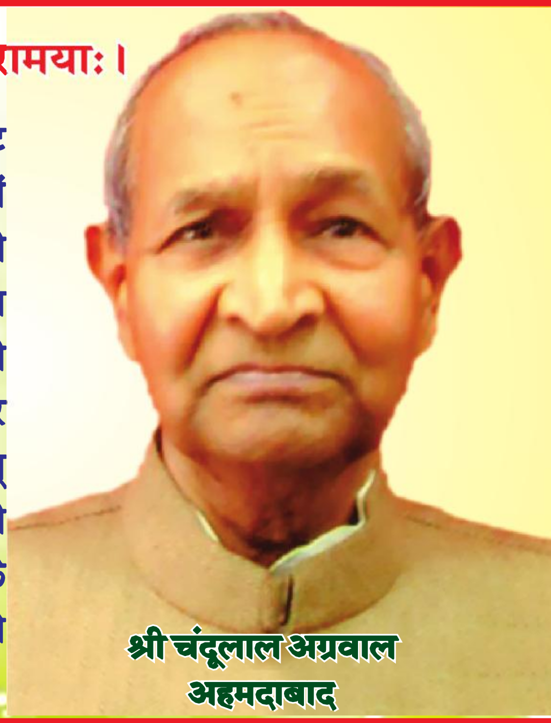

श्री चंदूलाल अग्रवाल
अहमदाबाद

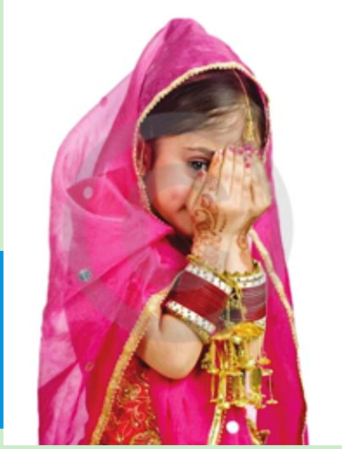

मैं अभी बहुत छोटी हूँ

मैं बहुत पढ़ना चाहती हूँ

मेरी शादी मत करो

देखो महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में क्या लिखा था

जो ब्रह्मचर्य धारण, विद्या, उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये बिना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते हैं वे स्त्री पुरुष नष्ट-भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते ।

बाल विवाह अभिशाप है

आज प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति यह स्वीकार करता है। परन्तु 125 वर्ष पूर्व ऐसी स्थिति नहीं थी।

तब महर्षि दयानन्द ने अपने महान् ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था

बाल्यावस्था में विवाह आर्यावर्त्त देश की हानि का प्रमुख कारण है।

आओं हम सब मिलकर इस महान् कुरीति को निर्मूल करें